

ಪ್ರಕಟಿತ

ಪ್ರತಿ - 1800







रही गोपायि पतरो न मः ॥ री मादित्वा नि न व म र त्पो न मः ॥ गु तु दे न मः ॥
लब्धाधि परास्या दने न तु मा ने न डि न मा न्या बाध पाः स्मृताः ॥ इति स्या व नो मः ॥ १५ ॥
व स्यु रसि द्वांते ॥
साधु ला वरो षे तु
उत्ता मता म गु
बुधा मु क सित रं
ता मा न्या बाध नि ता क्ति तां विलि प्तां रै क

मा न्या बाध नि न र्था स ॥ इति प्तां तु प र्णं तु तां र्था
दि र्थौ मा न्या व नु षा ता वे ति ॥ न न को रो न व व र्थ
॥ ॥ ॥ स न र्था क्ति लब्ध मा म त्तां रौ षो ब्य रो न वि
इ की वा माः ॥ ॥ त प ल प ति म ले ॥ वि र्थो न्नि ता क्ति लि
म मा स रौ षं मा न्या गु नौ ति ति

७ वंशावनोक्त पतिउक्तः। तथा पात्रासि सितते तत्पत्निथ तावदनामीक
 तः। सौनवां दौतु मे वलं कान्ति वा नैस्वै वा प्रिति — चिवानस्य। सिद्धांतमृततेरेन
 निजितौ। तात्प्रायेव
 नाकं मंत्वा दिवा वदन्तः। लोकं रास्योः पुत्ति
 क्षालत्र॥ — मानकोकां। वैलाक क क र क वा — पतुला म गा
 क्षीप्रानंतवानपत
 अः क म सो व रं ती। नागमं लिख्यथाधिपतिथां
 मानस्यानलेराः। मेप्याधिपातिन क रा ३ अवा न क्राताः। गानवाधि पत्रु॥ वैलादि मे
 पत्रु
 पत्रु नि क क र वा पत्रु ग्मा सौ द्रा कं तौ लि म क ना दि षु वा — सनेराः।

लवाधि
 पत्रु

१
लेयो ३
राधिय
तया ४
दिरु क
मीधिय
तया ५

सा मा अ मंति त ह ना या क स स्या ना या था ना व्य वृ ज्जि व स नी न स या ३ कुं मे
॥ १ ॥ अ ध रु प स सा धि प त या ॥ ५ ॥ य मे ना नि व को कुं या ३ स्मि ओ दे रं उ ना
या क ४ कं ना यां
मी नौ मा म कु हौ
त या ॥ ५ ॥ वै ल मे
प न य क की तौ ला आ ३ क म रो धि प ३ ५ ॥ अ र वो ग क प ति रं को न ३ ३ या ॥ ॥
व र से कां वृ क स प मि गा र स्त्री व न न मां ग ला मे व व ॥ ॥ ॥ अ य वि र द क मी धि

पतयाः॥५॥ मे षस्यं कांतिवोनेरो विखं मथि यो तदेव वा पफी गाम अख माती
ना ते कः स्तवरा या ऊ मं॥६॥ वृषस्यं कांतिवोनेरो परु नां व म माथि पः कल त
वमिति कु यो यो नि को त व का न गां॥७॥ मिष्ठ नेराः क पी गां व प
ल्लावका व तु पुर्वकां न धरा स्थाथि पः रेवे व बु दु ३ः स्थि का न गां॥८॥
पतीरो विप्र माती नां सर्वे कल व नाथि पः स्थि ने राः कति या गां॥
न ल गा या न न ना या कः॥९॥ कं ने राः रु द्ध मा ती नां तु मि स्त्री गां व का न गां॥

१

तुलेराः स्वर्गं धीतुनां वैराग्यानां वा वशा विपाशां विपाशां कीदृशः सः च किं कुरुतां नाक
 स्थाः सिद्धिं काः कुरुतां वा पेरो वे उरा स्थापानां बी आनां यरु कुरुतां विपाशां
 लता गुल्मा तनुतां व वैति उः कुरुतां मेगे कुरुतां रो वरु पुत्र वा वा उ०
 वस्त्रे उ को हवीं ॥ १७ ॥ उ व ता शा नरी ला नां आ कारां उ क उ उ उ पे
 ते वा मधि पा व र्षे किं आ आः उ रा उ उ कुरुतां ॥ १८ ॥ अ घ स्यं व ह्य न
 पी लं ॥ ५ ॥ अ वे स्मि न् प्र त वे दे र्षे प्र तु त प अ सो गा वो प्य न र्या कुरुतां स्थापानां
 नि उ प उ वा र्थ स्य सि नो लो रो प्र रां तां नृ पाः स्थापानां वं कुरु वि नि कुरु वि उ प व ना व रु ना

विता को वैः स्मृया स्मृमो द्वैस्व मा वै विषो उति क गं नु क्वा पी क नो उः सिस्व नाः ॥ १० ॥
वृष्टिः का उ क र्ण मती वरु मती रा ल्मा डिस्व स्मार्थि मिता डिवा थि तयोः ॥ ११ ॥
किताः प्रमुडिताः सौरी ल्मा त्ता को क नाः ॥ निर्वैः ॥ कलि पात वंति
विज वेस्व म मी को स्मार्थिताः के मं वा स्ति सुति क मे व म वने उ कं
वरु कलि के ५१ ॥ सदैव स्थ - मनि व ता स्त नो ह्वा वा तु गानि
मह्य नाः स्मृ न स्म मा निषु नो ग मु क्तः ॥ लो का कृ वि क्त व न गो ग क वा
कि अ नि ना ना ग वै निति क गो क थि वि क्त र क्ते ५१ ॥ वा उ ती त कि ति पाल को

पाः क्व निरु वृत्तिथिनिधां नो यद्वत्तुति कं मा नो गं स्य संप्र का नां स्य को स्य वा नां तव
 ती प्र मो के ॥ ५ ॥ गा वो ब्रु की न च्युता निना मस्य वृत्ति यः स्य स्य थ ना च्य स्य प ३ ॥ नृ पा
 त या नो ग्रा ब ला य संयु ता क र्ण ति मो रं ति न नाः प्र का प तो ॥ ६ ॥ नि का
 मा वृत्तिः - ब्रु थां मा स्य प ३ ॥ नि ना नि ना तं क त या स्य को स्य वः ॥ स्य म
 न स्य ते न मा नी ति न वे र्थ नौ च ता स्वा र्ति न स्य स्व था नि का ॥ ७ ॥ प्रा
 वृत्ति रा स्या सिल स्यो स्य स्य प ३ ॥ ति क मा नो गं स्य संप्र का नां ॥ मै ती नि ना तं क त र्ण प ३
 वृत्ति र्मा र्ग स्य र्णी मु स्य व ह्य ना स्या त् ॥ ८ ॥ स्य वृत्ति ना नो गं मा र्गो व स्य स्य स्य प ३

म धि तु वि तु ति था मां गा वो व रुं श्री न उ आ पी ल था ति वे त्त ना तं क त मां व ता
वे ५ ५ ५ को प र्ति पा
व र्णा आ वृ द्धिः ।
रुं श्री न म ओ उ वा
उ रा उ रुं स्व सं उ गु उ व श मा का ति वृ द्धिः क ना त्मा को त रा रुं वो आ त आ त रा मा क
ता स्मः य द्वा ग म ष क ति तु आ म पि था तु व र्षे पि न ० प थ र्शे र ता नृ प त रा र्शे र ता

॥ अंति विधास्य वेस्व यं मनिनता रस्य क म्पि सिद्धाः । इदुले कले पिबुधु थां म
 ना ग स्यो त्मां को मं स्य म्पि लि व तां ब न म्पि र व ना वे ॥ १० ॥ गा वः प्र तु त न ज
 स्यः किं ति पाः प्र सां ता ना नो म म्पि ब रु थां म्पि पी लं स्य म्पि
 म्पि स्ति त स्का न त थां म्पि व र्धे ॥ ११ ॥
 म्पि तः प्र मा वि नी । स्य स्था नि थां म्पि पी ला नि स्य स्था तृ त था पि ला क स्य स्य
 स्यां म्पि नो ग ताः ॥ १२ ॥ स्य स्था नि स्यां ति प्र म्पि सो ति वृ धिः थां म्पि ब रु म्पि र ज्जु तं

स मर्षः प्रहस्यं मर्षकं ने सो न ग । तु वि के अ वि के अ गो म र्णी रा ॥ १०५ ॥ प्र ह र्
 तां ओ व र रा लि मु
 ला लि क र्ण स प र्णा
 धु म मु र्णा र्ण ग रे
 स्रु त र्ण अ व ल्लि व र्धिः
 मर्णां तु स म । स म र्षं र्ण नो त र्ण के म र्णो ग त । वा न्ना न्नि र्णी तिः क र्ण वि क र्ण

८

ॐ क्लीं लोहितं वृद्धिः सुरतास्तु तानो ॥ १० ॥ एते राः सुखं दीप्तं मरुतीव वृद्धिः म
या। वसन्तो पथि सन्तास्तु देव। सायनाति को।।।।। वा दसा ३ वृद्धिः स्थाता नो
गा ३।।।।। को मी। नी।
लो। कस्तु वतु वपरां
पापमति मदीराः
विहृति अं क्व विरं न
थि का मरो गतास्तु ॥ १० ॥ पुसा वृद्धिः सस्तु वृद्धिः सस्तु वृद्धिः सस्तु वृद्धिः
सो र्धा प्र को नो। गी वी। तो नो नित्या व म र्था तस्तु वे तु पाः सर्वं हि स्यो र्धा ता वे ॥ १० ॥

दृष्टिः सप्तमः। तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः। तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः।
पाः प्रतापं तां सर्वथा विनापि सप्तमः। तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः।
वर्तमानं तु सप्तमः। तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः।
यस्य विनापि सप्तमः। तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः।
सप्तमः। तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः।
तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः।
वां न। तिलस्य सप्त संपत्तयः सप्तमः।

पुष्पस्य अथासिलस्यथाथांथां पुष्पस्य विनस्य विनोराथांथां आनोरा
 यथायस्य रुतस्योस्योः लोकः सानंतिनं नवे ॥ १८ ॥ वर्षमितं स्य
 नैलस्यथाथा
 नैवकुनातोक्त
 अथावंतपीला
 अथावविशामिक्तुविपीडातथापिस्यदस्य अथा अथाके ॥ १९ ॥
 नैविलंथांथांमपीरुमथांसाते अथा अथातिलातिवृद्धिअर्द्धिना



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 यन्मयां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 यन्मयां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 यन्मयां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 यन्मयां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 यन्मयां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 कावितो वा ॥ ११ ॥ स्थलपंक्तं लंघयन् वदन् नववृत्ति उत्ति उत्ति उत्ति ॥
 श्रीमद्गीता रावन
 तदेहं वदति
 क्वचित् क्वचित्
 एतन्मया नो गत
 संपत्तौ के मं प्रकानां सततो ह्यदा स्वरुतं परुनां रत कृत्या वे ॥ १२ ॥
 एतन्मया नो गत मती स वृद्धिः ॥ १३ ॥

माः प्रमदुतातिकांरोमा मयोरंकोरोतकृतिविआर्थिआ॥१॥५॥अल
 नांभुपीलानकोपाःस्थारंस्थिगा मिति तयां प्रआनां॥५॥प्रोगोकागादेरा
 र्णस्थंकोथान
 त्यास्थपीलं वम
 तयारास्थकोपा
 स्थितिमाग्नि
 त्यास्थंभुपरुविआनां॥५॥प्रतदस्थाम्प्रततदावे॥५॥५॥कृविहृति॥५॥

10

निरुपद्रववक्त्रविहाराभिरुक्ताः ॥ ५० ॥ नो मा त्रिबोनेन नृप ॥ ५१ ॥
 उवर्तितां नृप ॥ ५२ ॥ ल वं मे व ग यो म र्ही तु मा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ क्व वित्तम आ त म मे नृप ॥
 त थां सु व ष सि स्था ॥ ५६ ॥ स ले थां मा स प ३ ॥ नृ प ॥ सु र लिला सु र स ते
 म रा लि नो क नैः ॥ ५७ ॥ स मा के म नृ ल स की ल के ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ सु व ष ष स
 स्था त्रि वी लं सु ति कं ॥ ६० ॥ स्था क्त म मा नो म स स प ३ मा नां ॥ सौ मा ३ स स
 निरुपद्रववक्त्रविहाराभिरुक्ताः ॥ ६१ ॥ पाः सौ म म त स सौ म ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ सु व ष स स्था क्व
 निरुपद्रववक्त्रविहाराभिरुक्ताः ॥ ६४ ॥ निरुपद्रववक्त्रविहाराभिरुक्ताः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ सु व ष स स्था क्व

१०

विधा नागा वेद स्युस्तिताः परु प्रभाः ॥ ४४ ॥ पर्वतो सुदृष्टिः परिलस्य स्य स्य ३ः
निरीयतः सवकनाः सुतिर्मां क्विदिता दीति जयं स्य मं कलं विनाथि कं नमि न पा
विनाथिनः ॥ ४५ ॥ व
याकि को पैः ३ रा ३
व ४ ॥ ४६ ॥ सुदृष्टि
मना रा ३ पै ३ न
मो ३ ॥ ४७ ॥ सुदृष्टि यः स स परिल स्य मं कलं विनाथि कं नमि न पा
विनाथि परावः प्रभाः ३ न ३ मान ३ ज वा सुतु पाः ॥ ४८ ॥ सुदृष्टि यः रा ३ स्य स्य

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कस्यस्य संपत्ता नरणांति राको उक्तं मुलं स्यात् ॥
 नाशस्यो नाशस्य वत्स का स्य ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कस्यस्य संपत्ता नरणांति राको उक्तं मुलं स्यात् ॥
 भावी नृपवंशित
 ले नानल वं नृपा स्य ॥
 आस्य का पा सति
 मो पैः पुरा नाम
 नि ॥ अथ नस्यास्य मा
 नं मोल य के पितृ काल क लय ना ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कस्यस्य संपत्ता नरणांति राको उक्तं मुलं स्यात् ॥
 यादि नौ नैः ॥ ३ ॥ रादि नैः आ परा वो नृपा स्याद वं न
 ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कस्यस्य संपत्ता नरणांति राको उक्तं मुलं स्यात् ॥
 लाः स्य मा प्तिषी पीडा प्र मा नां नृप वो न नो गा
 पि पिं गला वे ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कस्यस्य संपत्ता नरणांति राको उक्तं मुलं स्यात् ॥
 व्यं क गतां बुतीती ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कस्यस्य संपत्ता नरणांति राको उक्तं मुलं स्यात् ॥
 वं क गतां बुतीती ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कस्यस्य संपत्ता नरणांति राको उक्तं मुलं स्यात् ॥

११

मो नो ग्राह्यं संप्रकाशं। स्थित्या नृपाः यमनता कला स्वस्थिदा तिव वे
कला च स्थिति आभवा। अथां कलं कीदृशं तं वृत्तस्थानां नाति न व्यंज
मलः प्रपीड्यको
इत्यो गुराद्विषम
कोषो न वा दु
उमं लोके उमं ति
नो कं लुति कं मा नो ग्रा मनीति बोधम गोविप्रयो पाञ्च नृपाल नाराः स्यात् ३३०



ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ शिवस्तोत्रम् ॥
शिवस्तोत्रम् ॥ ३ ॥



[illegible]

१. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ३. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ४. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ५. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ६. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ७. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ८. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ९. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 १०. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मादः संधिद्वयं तिनयारासि सुतु व र्ष ॥ १ ॥ स्य वृत्तिधां मा बंधु स्या नीलो ज
 वृत्तिः या शांति के मिति न ता मुद्रिता स्व वि प्राः य मी मान कति मदी० वरु को ग को
 रव क ल व मा रव मुद्रि
 पति ली मु रा लिसा०
 कति मदी० मते उ
 उ ग्ना उ मा न बिल म
 सार स० क मा मी नो ग बंधु नं न प र स्य वै री स० मो र सो क उद्रितं क ग र कि व र्ष ॥ २ ॥ पक्ष
 इति न प की लं स्या मा प० ५० ३० पक्ष ॥ रवी प० ५० पक्ष ॥ ५०

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

मं० ॥ १० ॥ का स्वस्वार्थं स लुप्तस्मिता । स्वात्मार्थं ते यः प्रसिद्धिं पोषयति
मं० ॥ १० ॥ नाथिना ये स लुप्तस्मिता । गोथु माराली । रागा कादियः ॥ ना
विद्यानि तुर्वीयां ल
मथ्यानां ॥ १० ॥ नाथिपो यः उच्यते । स्थितं गमय
सुखा । स्वे वं व ३०
तिनि सिला गम्य मंतस्मिन् ॥ १० ॥ मादः स्यात्
सुनये नु स्यामान
उभ्या कृत्वा गमनं पयो रधि मित्ता दं । यः शो
दि मं मं नि ३ ता तु
वितु स न स्वस्वो नाथि पः ॥ १० ॥ पते गुरु उत व ३० ॥ १० ॥
मा को त वंति १० ॥ यः स्यात्तु वि तु नितो यं यः शक्ति मं नि ३ ता मं नु मा स्वलो के । कृत्वा स

अथ लिखितः ॥ १५ ॥

॥ १ ॥ वि त प द सिः क्व वि त ल प द सिः दि आ गतिः स सा प तो म दी रो ॥ १ ॥ क्व वि त स सा क
 स वि त स सा त व त व द सिः म न वा स द सिः के मं व त ३० क ग तां म दी नां त मं व त स
 वि प तो व वां ३ ॥ ४ ॥ के
 स म वा स सां ती र्थ न
 म वि त प न ला नि धां
 द ग ति मं स सा नि स
 म वि लौ ल धा न्ना न्ना
 नि स सा धि प तो व मं ३ ॥ ५ ॥ इ ति स सा धि प ती पी ल ४ स सा तः ॥ ० ॥ म य धां ना धि
 ॥ १ ॥ वि त प द सिः क्व वि त ल प द सिः दि आ गतिः स सा प तो म दी रो ॥ १ ॥ क्व वि त स सा क
 स वि त स सा त व त व द सिः म न वा स द सिः के मं व त ३० क ग तां म दी नां त मं व त स
 वि प तो व वां ३ ॥ ४ ॥ के
 स म वा स सां ती र्थ न
 म वि त प न ला नि धां
 द ग ति मं स सा नि स
 म वि लौ ल धा न्ना न्ना
 नि स सा धि प तो व मं ३ ॥ ५ ॥ इ ति स सा धि प ती पी ल ४ स सा तः ॥ ० ॥ म य धां ना धि

10-27-91
10-28-91

न कथां नानि सदीति तां म
लंति वे ॥ १॥ आदिमथा वसा
पे सती ॥ १॥ सवलाप
मो यादिथां माथि
ल न क०। अ प आदि
रथां मदाथां मां च
नयाथि पे सति ॥ १॥

स्वथ न मत्तं तं ल तं ते ते न स स स
मत्तं तं ल तं ते ते न स स स

माथि प य को सु यो ह्य अता वि
प्रका मां स प को नि लां न दे थां माथि
म य क रो वि सु म्मे प स्व नि कं ला मथां
पो न वे तु ॥ १॥ पी त थां मा प्र वृ थि स्व रो षं म० ३ पी
क नः सो म्मे या दि थां मा थि पो न वे तु ॥ ४॥ वृ थि म
लि तं द्य द तो न सः। स ति क० स द लो के अ म नो था०
सु था मा नां न स वे पां स द द्धि क न रि थ त ड थां मे

स दी ति नी लि तां स

तु मया शरो वथा नानि सार्वाणि अत्र च कुं उते रा निष्पद्यते पदति था नाना यं व पा व
 अथ अथा यथा वि वे की लं लि सते ॥ — ॥ अथा यथा यथा रा सु यो वै वृत्ति स्थाना का म ती तु वा
 तत पां नाना यं वृद्धि
 विनि रं धल था
 ॥ १ ॥ वरा ति ॥ ७ ॥ पत्त
 ॥ २ ॥ न न तु मि ७ ॥ वे
 ॥ ३ ॥ वा व स स्या
 ॥ ४ ॥ न न वे त सो स्या ॥ ५ ॥ अथा यथा यथा रा मी वे की मृतो की दन प्र ता थ नि स्या ॥ ६ ॥

अथा यथा
 वरा ति ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मेधा
 पिपरी
 ल० ५
 १००

१००॥ भो नो न क मे व्यो वर्तु लो वायु स० वनः ॥ स० ३ वृक्षि रे रो ता मे न वो मे व्या धि रे
 ति ॥ १०॥ ह्रुं ला का नः सु त मे व्यो ध ना वृक्षिः स० मंत तः ॥ त हा का स्व स० पू गी व० ३
 ॥ धि पे सति ॥ १०॥ व्य०
 स० वृक्षि स्व तो मे मे
 पु नितः ॥ अ ल प तो
 क रे व त रु निः व रु
 मे व्यो धि पे नु नो ॥ ५॥ म म् का का नः काल मे व्यो वृक्षि पू गी प्र व र्ति तं ग ३ दो यः

स्वर्दुःशिरः रुके मध्याधि वेस्तीप ॥ या का नो को मसा की सः खेत मे व्य
स्वनिर्गल मविश्रुत पात खेत दागे मे व्यना घे रा नै खने ॥ २ ॥ इति मे व्य

मध्याधि वे नीलं स्या मा

१ नीलं लो सो मा शिक

चंडी वसु यो य

गी रा डि रा क रै अ प्र साः सति के मा नो मं वः शिरः खंडे र साधि वे ॥ ७ ॥

सः ॥ ५ ॥ आ घ र साधि वे चरी लं व रुते ॥ ० ॥ ० ॥

मां मि ठो गु ठ स रिस म द्य य भ स ति के म ति

डि र साधि वे ॥ ५ ॥ व्यु त तै ल म उ नो डा र धि

ला ता की रंति क न स्यां स वि स्ते ल मु ठा डि के न स्यां अ यो ल प वृ क्षि ज त वे जे
 ला र स्या थि वे ॥ ४ ॥ सु वृ क्षिः सु उ व्या मा वः परि लि ता स स्या का त अं ना को ना
 स्व ज्ञे का नी ति यु
 पि स्या म् अ यिः स
 नो या डि न स्या थि
 व्या त र्ना स्या म्
 न स्या म् य र्ना की रं नी लं तै लं व द्दि रं कृ त्ते क न स्या प सि स्त की रं म् के न स्या थि
 ॥ ५ ॥

क्ता स्यो मो न स्या थि वे ॥ ४ ॥ सु वृ क्षिः स्या वृ क्षि स्या
 परि ला न स्याः (मा दः सु स्या त्माः सु उ व्या)
 ये ॥ ४ ॥ सु वृ क्षिः स्या स्या स्यां प तिः मा द र्ना सु उ
 व्यं व न स्या स्या म् त मो या डि न स्या थि वे ॥ ५ ॥ कृ
 ॥ ५ ॥

[illegible]

आप्रमो
मनाभा
नि।
२१

साधये ॥ ६ ॥ कृष्णवस्त्रं कृष्णपीलं नीलं अनकंतो हवः ॥ तिराहा मन्तु का रीतः ॥
मन्त्रै वै निनसाधिये ॥ ७ ॥ इति निनसाधियेती पीलं स्यात् ॥ ८ ॥ ५००० ॥ ५००० ॥ ५००० ॥
व्यनाभा नि ५००० रा
वभा दत्तं सवती ७
भास्वति व्यना न दत्त
७ कं ७० ७० ७० ७०
नि स्यात् दत्तं रा
भास्वति दत्तं रा ७० ७० ७० ७०
भास्वति दत्तं रा ७० ७० ७० ७०

अ कं री ने र व नः । य सि यो क न वि स्स । ग री त यो क न मं न तं । आ तु कं स्या प्र मा
गो न क ल रा र्स्व व की र्ति तं ॥ १ ॥ ३ रा ता गं स्या मु ड्रे षु ष उ ता गं प र्व ती रि ष । तु म्मा
व लु ष ति गं स्या
वी ले ॥ ५ ॥ ५ पु री ष
न ले ॥ आ र्स्व ग ता
अ ध व यो डि त रा था
अ ने र्ता त वृ षं डि
रा ते त्ता म्मा र्स्व व मा उ तां प्र मा व डि व द्वा वि व रा क वि डु न त वृ षो ॥ ५ ॥ ५

७६

राकं गुणमंतं कृत्वा मुनिति त्ति ग मा मने त्वा त हे वं दि गुणी कृत्वा गुणाय कं पु नः ७
 जगत्प्राप्य पितृं तं गुणं ति ना ना ना उ ना वा नः स्तथै व रा कं द्या मलु स्त या वो ना तं जाराः
 पुं न म वा व के आ न्म
 दि गुणी कृत्वा पु प थ
 कं वी रां मे वे रा कृ न
 तं मुनिति त्ति कितं
 रा स्था ता आ न्म पु
 त ना मा पु गो व दे रा ग्गो ह्म व प व व प
 म म प य आ न्म पु क ल्या व द म वि प गु मि तं मुनिति त्ति कितं वी लं रो पं तु गुणाय कं ल्या व द म म
 रा कं रा म म तं कृत्वा मुनिति त्ति ग मा मने त्वा रो वं व
 कं पु नः ७ न म्ना प व नं मा लिके नं व दू तं रा डि म ति त्ति ग
 री वी लं न व की ति त्ति ग्ना क ल्या व द म वि प गु मि
 वी लं रो पं तु व ग्ग य कं स्था त्ता पु थ आः शो ठ
 था त्ता त्ता आ नि द्या आ ल स्था शो म म दू स ल त्ता त्ता
 आ र्थं का र्थं न सो त र हे वी लो त्ता ति

१५३ क इति स्मृतं ॥ रा कं वे ३ क तं कृत्वा मुनित्तो ग मा रु ने ला त हं प हं
 गुणी कृत्वा ना मा यु कं ७ नः ७ नः ॥ ११ ॥ वंश्च सुषिके मा कालि स्वा नः को ल स नी स
 यो ॥ मा नी मा सु नि का
 ता कि ले व रो षं दि मु
 मा के मा नि का नां क
 या र्ण कां स्या मे व न
 र्ण कां ति नं कां ति वि
 ति त अ न स्यां मां रा नो न स्य मां मु न यो व दं ती ॥ ११ ॥ स्य स्य स्य ति धां नो व या नं नो

मरातं वि३ः वतुः षष्ठिस्तु गोथु म बागके प० वराहलिभा वीवके वतया मा षलित्या त
हि उ मरु ता नि ष पं वारा लिले पो का वि ष सि स कु लि ह के प म डे वे को न ष सि स क
स्तु नी पु म गो स्ति
२० उ इ का वतुः षष्ठि
न इ ती रित भ स्या०
लिति वि० ना वरो
षतु वस्तेपि वतारि स्या स्या द्व० उने पं व य का त०
न व कं मथु वस्तु नि लि रा म कु ल के पो क० इ का म
का० ती दा न र म० वस्ते स इ का म ना० वि त०
षतु म ष वि दिः स्या म म य म

[illegible][illegible]

[illegible]

१२

अ. व. र. र.
का. ति. पी.
ल. ॥

नमः सा तु सा न न इति वि उ ल व धा कृति कारि क म् ॥ त नु मा नो म नः स म
नमः ७ त्रो म त म म यी ॥ प्रिये ति व ह्म नः प्रो क्ताः कृति कारि य धा कृ म् ॥ ॥
कं वि क व ल मा रु म् ॥
मं यु कं न निला व
रि स मा यो ल व्धे
दा या नि ॥ — ५० ॥
मृत म तौ व न्ता मे ति तौ मे व म म् ॥ नं र म् ॥ त्वा त्वा स म् ॥ दा कि नी र्मो म् ॥ ग नो व म् ॥ दा मि र्मा
मृत म तौ व न्ता मे ति तौ मे व म म् ॥ नं र म् ॥ त्वा त्वा स म् ॥ दा कि नी र्मो म् ॥ ग नो व म् ॥ दा मि र्मा

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

तत्तुः सुतं तितरंगा वर्यथ
राशु मूवलिगामी कुंतां
पसाया अमा वनेकु ॥ १ ॥
वा ३ राशु ने रा मीरो वर्यम म राशु तां ॥ १ ॥

अः प्रलन याः क मातृ वर्यथे ने राशु ॥ १ ॥
दाम अर्य अघिल ॥ १ ॥ ५ युक्तं निधि तुं कुंरो
लक्ष्य वलिगामी कुंता प्रनः ५ व क राशु तां ॥ १ ॥

व्याना न को थ्या ० ३ म मृत श्रुतौ व जा मे ति तो मे व म को उ नि स्थान का ॥ ३ ॥ का को री ॥
 म म ग को व मं ग म म स्या त मौ ना क स्य वा क पु त्रा ॥ १ ॥ ३ ॥ म म कि प्र व ने ॥
 ल थु व मि र सी र धा का
 री ॥ त वे ल ॥ १ ॥ ३ ॥ का
 र सी का धा ॥ ३ ॥ य स
 अ मी य मी ब्र पित
 व न री ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

अ ध म
 का को
 का को
 ३ ॥

[illegible]

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

चतुर्लोकानां वीर्यं कति शोभति ॥ पुत्र कुम्भान् गतुं युतिं बलिवाक्यं बन्धास्तस्य पादौ ॥ १ ॥
 नानां योऽप्युपायान् ॥ २ ॥ जायते काकीव कुम्भास्वस्थालिको सुखं पकापातुं लिङ्गं ॥ ३ ॥
 कं पावनीलोत्पल
 माथ दीयाव वाति प्रवर्णाग्निसमीपितो जित ॥ ४ ॥
 सारलिकं स्मृतिलं यद्वनवागकं कुम्भं त्रिवर्णा
 अन्ताभ्यां सुवर्णं ॥ ५ ॥ कृतं तां मयं मया स्तोत्रं
 पश्यामौ वराहौ वस्तुपालं देवकं ॥ ६ ॥ तया ॥ ७ ॥
 कं मे सुविधीयते पश्य दन्तं ॥ ८ ॥ कृतं कां ॥ ९ ॥ तां ॥ १० ॥
 सारलिकं वलाकं ॥ ११ ॥ मया ॥ १२ ॥ पातुं ॥ १३ ॥ शिलासु ॥ १४ ॥
 र्वं कं पालं मृत्तिकां ॥ १५ ॥ कं माता ॥ १६ ॥ ० ॥ १७ ॥

१०

[illegible]

उति धो। थ दा न ना नि वि नि दि रो लो किं सु पू को नु व ना म प की रे ते शालि सा ता सु नि
तं० सु न १० रा माली मा तं ग म र त क यो ष इ तो प्प नो रा भा कु यो वि सु रा स म नि प त रा
व न वि० म रा उ रा की
न कं व ल कं त घा रु व पी ला रा कु तं व सु म
क र को पु व सु सौ र कि गी स्यो उ मो रा रा
उ त रा ति सु सो म उ० १३ र यो वो त म ग कु त
सा या० के प स्वि म स्या स्या र कि गी १० नि दि रा
कों ती व र ल स म्मा स म्मा १० ११ प वि म्मा १३ १४
३३ पु म्मा ३४ त रा० कों तिल क मा म्मा १० व यो १३ नि दि रा

३०

सुं तं व वा रि पु॥ अ
मो रो त म्मा स्या ता०
प्रा दे उ र तो म्मा स
म य म्मा ३१ ० १ इ ति स्य
म म्मा ३२ ० १ इ ति स्य
म म्मा ३३ ० १ इ ति स्य

अथ लिखितम्

[illegible]

अं रं सि मिलमरुप

जा व्यो न० उ ति म० ३ कि पाप व० ॥ ५ ॥ अति वान गते स्यो नि वति वक्त्र० गते ॥ ३ ॥ आ का कृते ॥
 गहा व० उ ति म० ३ कि पाप व० ॥ ५ ॥ अति वान गते स्यो नि वति वक्त्र० गते ॥ ३ ॥ आ का कृते ॥
 वा त० ॥ ५ ॥ ल पु स्यो ॥ ६ ॥ ला ति ० म म न ॥ १ ० ॥ नृ प स्यो ० म का ना ० स्य व ल ना स्य म न ॥ १ ० ॥ अ ल नी ज
 रे रा ॥ १ ० ॥ म ॥ ३ ० ॥ कु रे
 तै ल सि सं ३ सि ० ५ को
 वे त ॥ ३ ० ॥ सि ० ५ को
 सो ॥ ३ ० ॥ सि ० ५ को
 म ग द वे मे व्ये के स्या त्मा ० स्यो ग मि नी त य ॥ ५ ० ॥ व था ॥ ५ ० ॥ व था ता रा स्य अ ति वृ सि त दि व
 ति ॥ ५ ० ॥ प स्य म मे को व क ग तौ व क मे द्वा व न व्य को ॥ त यो नृ पा द व द्वा के ना व ता नौ अ ० ति ॥

३०

ॐ रा. सि. वि. लि. ५४५

नो मृतविपती नृणां ॥ — परस्मैपदक नासि मे ताः सेऽहः वत्स ३४ प० वसे यात्रिष तृण सा श्रावत
 न स वै क दत्ता तु पाता माशु द प्रथम ॥ १८ ॥ ता नु वि सुनि स्य उ त स्म कि म भुः से म — स्म तु प त य
 कै तो अ स्य व त्ति म
 ११ मृना मे त ३४ प० वा
 सु था ॥ १८ ॥ प न स व का
 १२ त स्या न ग त ० व ० उ त
 १३ त्ता स्म उ व व ० उ त्ति को
 न या त स्या मी ता ना म क वि क म अ का री ना ० उ वा ना तौ ग नि क ० व ० उ मा य क प त त दी

मु उ न प ते तु थ ० म थ ० रौ रि तै व र्षे मी म र तौ तु ने तं
 मृ त्म रि स तै त्ति स मु उ ना क उ रा त्तिः वि श्रा ति पु रं
 कृ ति को उ त्ति को ना ति उ म थो क ना स्य स्या वि ना से ता य
 उ व ० त त्ति त्ति ॥ १८ ॥ प वृ णि यो म प र क उ उ रो य
 गो या उ के ० उ मे दा ॥ क ला रा य स्थे प र्थु — ल ० व ० ३

किते वा स० पुनर्वसुः स० उ० व्या० तद० ति० प० प० कामिलयो म० कलक० यो म० क० ॥
 अं स० य० स० वान० यो म० स० मो ननाडी ग० उ० रु० क० यो म० स्त्री० धृ० ध० यो म० धृ० ध० यो म० ॥ १० ॥
 म० यो म० म० म० स० यो
 यो वा प० नि० री० क० यो
 व० लि० री० त० य० उ० क० अ० म० त० न० व० य०
 व० द० दा० गी० रा० द० स० था० १० ह०
 का० म० द० क० ग० त्वा० १० व०
 क० क० ल० वि० र० उ० द० स० द० यो० स० स्त्री० लि० ग० स० म० द० म० १० १० स० मो० वा० ३ - ॥ ११ ॥ म० ला० ति०

न १० स क म उ रा क तु म नो वा ४ पुलिं ग तां या ति पा क रा स न मे द व ॥ १५ ॥ १३ ४ १३ ॥
 गी नो न ३ रा ति न १० स के प स्त य ४ स्त य ३ दि न स्या स्ती १३ ४ व स्त ३ न ते ॥ १५ ॥ ४ १३ ॥
 कु ली न म दा क ले कुं ते द षे वा पि त ३ थ मी रु ध म ली व तो ली कु ल पा र मा
 रु ३ रो वा ३ स म स्ता ३ क ला ३ प्र की ति ते ॥ १५ ॥ ३ दि तो मी क क ३ र ३ क ३
 स क लो व ३ त म दौ ॥ उ थो दा व स प ति ३ र ३ को स क ले कु ल मा रा यो ॥ १५ ॥
 क म ति ० म क ३ मी न क ३ व कु ल रा रा य ३ १३ त ३ द ष तो ता नु ३ स मी पे
 या ३ नो म रु ५ १ ॥ स स्य व ३ ३ प्र क दी त न कु ले प्र ति नो म या १ नो ० मा न त ता द ३ ३

७३: सौ नीम रुत य॥ १०५ पुनो बुध सदा मुख ७३: रुत प्रवर्षा ॥ १०५ स को व रुत
व आति रुत ना वातु च० व क० म इति दय व आति रुत न आति म द व ५५ ५५
ये स्थिते बुध रुत ३ क० आ क रा नि व० ३ मा ध ते ज० म आमा० य रुत वे वृत्ति यो
मा ३ प्र कीर्ति ताभा
दी। किं ते। म० ३ ति
नित्ति ती या ३ रा म०
स म म मिते ने व रा मा ति वृत्ता सप्त म० स दे ५५ ५५ पुनो ३ स म य० वृत्ति ता म

६५

स्यो ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः
धरुका त्वा ० धि त्वा नि पति ग ० ॥ १६ ॥ ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः
अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः
म ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः
यो ३ का म ॥ १६ ॥ ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः
रु ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः
ते म यो क ॥ १६ ॥ ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः
रु ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः सितो तयो वृत्तिः अ वृत्तिर्न ३ तो म यो अ ॥ १५ ॥ ३ यः स्यात् धातुः

दुपसमी १ गभतयो मभिं गतो ता नु स्त रादुक्ति नि वा न मा ॥ ४८५ ॥ रु क प त व स
 को तौ सु दृष्टिः स स्या स्य च ३५ क स प के व स ॥ को तौ न न ज क ल के ३५ ॥ ४८५ ॥
 बुध ना रि ग ते ता नो ता नु ना रि ग ते बुधे । त त्वा पि त्वा नु स ॥ क क ॥
 त रा वा रि म यो म क्षी प ५५ प च क बा डि स म कां ते रा रा ॥ के रा क मा
 ग ते । की व के तु या रा य ॥ कं कु या के का ग दे ॥ म क्षी ॥ ४८५ ॥ — ॥ ४८५ ॥
 ३० ॥ ३० ॥ गो द ॥ क्षी वे त तु ता र व क ले ना न थ न स्या व । स ॥ न दी धि स मा
 य ॥ कं म रू प्रा का न ल क मा ५५ ॥ ३० ॥ को व द ३ ग नी कं स्या त यो दी
 वि स ॥ ३० ॥ ३० ॥ म न्नो व द ३ य नी कं स्या ३ ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

स्वाध्यायं दीक्षितं नाम म॥ नै रत्नो दीक्षितं नाम म॥ नै रत्नो दीक्षितं नाम म॥
वै नी व० स्वातु अलदी धिम रु न् यम वा या यो वा नि नी व० स्वातु अलदी धिम रु न् यम
यम स्वातु अलदी धिम रु न् यम
यम क रु ता धिम रु न् यम
त प्र सा अ० रत्न
न० रत्न रत्न रत्न रत्न
रत्न रत्न रत्न रत्न
रत्न रत्न रत्न रत्न

स्वाध्यायं दीक्षितं नाम म॥ नै रत्नो दीक्षितं नाम म॥ नै रत्नो दीक्षितं नाम म॥
वै नी व० स्वातु अलदी धिम रु न् यम वा या यो वा नि नी व० स्वातु अलदी धिम रु न् यम
यम स्वातु अलदी धिम रु न् यम
यम क रु ता धिम रु न् यम
त प्र सा अ० रत्न
न० रत्न रत्न रत्न रत्न
रत्न रत्न रत्न रत्न
रत्न रत्न रत्न रत्न







२०

रुतमां च तामा र स्तार तमां॥ तु तं वः स्य व नोः अस्मिं पतिष्ठा प्प। कुं सो ३ मुजा मातिः वेतु नो। ग
इ मं नो रा इ मु प र्णा वि वि दौ न्ना वि र्वा अ स्मे ति रु को वि द्म त्म रा तु र्ण ता मा त ना तो क ना जि
व ता नि र्णो गा त्त र्णो अ स्म पा ग दे री उ षे स्य त द स्तार सो अ स्म ति था व द्मो व ष तो नो नु वी ति अ
दो दे वो अ त्मा ३ मा वि वे रा। अ स्मि ना स्मिः स्य मि थ त ते क। व य द्म व ति रु र्णो द्म अ
रा ३ मु द्म स्यः। त ३ ३ अ ये अ स्मि ना वि प्रो वि प्रे मा सं स्य त। स्य स्य स्य स्य स्य मि थ
स्य॥॥॥ अ स्मिं प्र क्क लि तं वी दे मा त वे रं द्म ता रा मं। स्य द मा द मा म ल नं स्य मि थ
वि र्व तो मु र्मा॥॥॥ प ष दि दे वः प्र दि रो न स्य वीः पु र्वा दि मा तः स्य रु ग ते मं तं। स्य वि मा र्ण मा
नः स्य म नि ष मा माः प्र तं मु स्य स्ति ष ति वि र्व तो मु स्यः॥ स्त्री अ क्क र्णो वै र्वान ना र्ण रां ३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

१ म ना ३२ न अ तु ३ मा नं का व्य त्त व नं क न ० स्य वी नं ब्र ह्मा स्य मि त व त्मा रु ता ना ३३
 तां पि ले ते ब्र ह्मा ता ३३ मा ना त का ० क त वो रां तु वि त्वे तो ३ ब्वा स्यो अ प री ता स्य ३ हि ३ ३ दे वा को अ
 वा स्य ३ मि व्धे अ स्य न प्रा गु वो न मि ता नो वि दे वि वे स्था दा अ स्य न वा रा त्मा क न त्मो दे वे त्म ३ ३
 वि तु पा नं मा वि बो धि ह्मा
 वि त्मा थ रा स्या दा वि तु
 व लो ३ ३ रा मा र्ग प वि वा
 उ सा ३ ३ आ ति ३ स्वी नि
 अं ती रा क स्या दा ति रां द्वि प रा मा ना रौ वि धे री नो दे स्य ३ रा धि नो दे वा ३ ३ स्य ३ ना र्थ नो दे वा स्या दा ३ ३
 वि ३ ३ दे वा स्या दा ३ ३ वा रु त रा मा श्री ॥ वा रु अ वा रु मा त मा ति वा रु ३ ३ नो द पां प त ना ३ ३ क ता ३ ३
 न र्थ नो दे वा तं पु र्ण वि मा ल ह्मि स क त मा रु वे मो ३ ३ स्य स म न्ने अ ति त त्मा ३ ३ वि वा ३ ३

४

२५

ति आ॥ ३०॥ नः पं वां वा विरो वि ता रि ओ ति आ चे दा म नं न आ ७०॥ स्वा दा॥ अ के रो र व न
त ३०॥ वे स्वा न ने द
ष पि त नं पि ता म दं प्र
न म स्वा दा॥ ॥ अ के रो
आ नं तु व न स्वा अ धो
अं स्वा दा॥ ॥ अ रि ति म ना या न य ३०॥ ॥ अं वि तं व स्वा दा॥ वि ता रो ३०॥ वि ति स्व स्वा दा॥
वि ता ३०॥ आ कु तं व स्वा दा॥ आ कु ता ये ३०॥ आ कु ति स्व स्वा दा॥ आ कु ता ३०॥ वि ३०॥

[illegible]

नमो तस्यै तस्मात्तत्र वे कुन तस्मात्तत्र इति ॥ ५ ॥ तु ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ २ ॥ ३ ॥ पितृपितामहाऽपने वेने तां तैस्तता मदाइरुमावता। अस्मिन्वावावीजावीता।
इति तस्मात्तस्मादा। अपरु पस्परुया॥ ॥ ३ ॥ तावाइतथा माष्णि र्गंधर्वः स इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै
स्वोत्ता। इति तस्मात्तथा माष्णि र्गंधर्वः स इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै
कोमा मता इ र्ब्रह्म कर्तं
राशि तो। इति तस्मात्तथा माष्णि र्गंधर्वः स इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै
आ। इति तस्मात्तथा माष्णि र्गंधर्वः स इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै
मता इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै
इति तस्मात्तथा माष्णि र्गंधर्वः स इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै
इति तस्मात्तथा माष्णि र्गंधर्वः स इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै
इति तस्मात्तथा माष्णि र्गंधर्वः स इ र्ब्रह्म कर्तं पातु तस्मै

तयो म क त्वा स्ता तग इ रं ति व न स्या पते अ स्या न तु पति ग द्वा इ न व। स्या नो ना स्या म्ना
 त्रि ३। अ स्या ३० लु वी य प्रि ० स्यं व ह्य नी। ता ० स्व स्ति स्वा दा। तु व न स्या प त्ना ये रं प त मे
 म ग थि प ति म् लु ग थि वः
 स्या ३ रं ति स्या वि स म
 स्ता त्म ३ रं ति वि ति ०
 यो लु पु त यो त ३ क ते
 वि भु तो न स्या न स्या उ वो ना म ता ३ रं वि भु तो न स्या न स्या न स्या त्म ३ रं ति ३ रं ति न म
 न स्या म लु ग थि वः स्या ३ रं ति ३ रं ति न स्या म लु ग थि वः स्या ३ रं ति ३ रं ति न स्या ३ रं ति ३ रं ति न

३

३

२५

तस्याः प्रकाशं पश्यन्त्यो तीर्तुं नो नास्ते ताः ३०॥ प्रकाशो पश्यन्त्यो तीर्तुं तस्याः तद्वत्
वातः कृपणा कार्शणीका मो गंधर्वस्य ३१॥ वातवे कृपणा कार्शने का मा य गंधर्वो य तस्या
३२॥ तस्या यो पश्यन्त्यो रो वर्यांती नो मता ३३॥ अतो पश्यन्त्यो रो वर्यांती तस्या त्वा
३४॥ तस्या नो तु दनस्य
या मादि रा म या बुद्ध
वदे उनी ने कारण स क
तो त्वा ३५॥ ३६॥ वा मी व
न स्या वा र्ध प त्याः ३७॥ मुं व तु ३८॥ नितो या नि वे कृ म क नो नु मा म नै न स्या द्या अ क्तो गार्ध
प त्या यो ३९॥ न स्या दित्या उ का व स्य दं स्य मि थ तां ४०॥ न वं द्या गो व स्य नी य य ४१॥ पृ ते त

८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

८

20

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

अ क यो गार्ध पत्मा यो री य ग पि पेष मा त रं पित री पु तः प्र मु ति तो थ यं द्रा अ रि श सि तो प त नो म
 यो त त्वा त ३ के अ न गो त वा मि स्था दा अ क यो अ न — गा यो री य रं त रि रं पृ ध वी मु त अ
 यं द्रा त रं पित रं वा कि रिं ४
 त्वा यो री य रं रं स्या नि
 मी त स्मा ३ न स्य ४ स्था दा
 मि नि प्रं प न मे स थ स्य
 लो क ४ स्था दा अ क यो
 अ न यो प्र मा म मे त लो मा य डि मि वि क बि रो अ कि मी त स्मा ३ न स्य ४ स्था दा अ क यो जो री प
 त्वा यो री वि क ता अ यो मा ता ४ या मा ता ३ प थी त्वा अ यो री य अ कि मा मा प ज ता ४

२

४

26

[illegible]

[illegible]

॥ अर्यं सिद्धिं पुत्रं मर्यादां ॥ ००० ॥

॥ सो अथास्या मनसा धृतो यस्या न क मोक्षि वे यानो धेनिते षष्ठोऽस्या मा। अथो मया
 त्रुर्दं। अत्रिर्भूतं कर्म मीमांसत तः काममंततः कर्म तो वा अनया दुत्ता तं कर्म मया मित्य वेत्तुं
 तुं वा। आ। वेत्तुं तां पृते
 विस्ववर्गः स्वस्ति नः स्वा
 माया वृद्धस वसे पुते
 तां र्दं शयं कमात्मनो
 माया जीत वेत्तुं वेत्तुं ३३ पुन र्दं स्व कुरु र्दं तं न विं डो वृद्ध सति ३३ पुन मे मस्ति माया
 विं र्दं तं तं माया माया माया ३३ पुन र्दं स्व कुरु र्दं तं न विं डो वृद्ध सति ३३ पुन मे मस्ति माया

१०

॥ वा ३ वा वि म धो कं धी स्वादां म त यं क न यो री स्व स्थि अ वि र न स प ति वृ त्त म वि म धो व री न व ३
पु त य त नः स्व स्थि अ म त यं क न म स्वादां म त यं क न यो री म स्थि न क म गा नु ना ति नि क लो व री ५
प्रा यः ज्ये ता र्थी न ब्र ह्मा
३ प मा म स्य वि शोः स
म य तो न जी गां मं त नि
व र्ध जं त स्वा दा ब्र ह्मा
तं ति नि तां ब्र ह्मा ब्र ह्मा मा
कं य त व्र ह्मे व पु ता नां म्मे ज्ञां ते न को र्ति स्त न्धि त ७ स्वा दा ब्र ह्मा ३ व्र ह्मे दे वा ज्ये ता र्थी ७ स्वा दा
३ स्वा दा व्र ह्मे व पु ता नां म्मे ज्ञां ते न को र्ति स्त न्धि त ७ स्वा दा ब्र ह्मा ३ व्र ह्मे दे वा ज्ये ता र्थी ७ स्वा दा

१०

४५

अनंतं कथाः ३ मंता या रुं न या तु प्रमातं न्या प्युतं पिबेन क न ७ रु वी रं। ब्रह्मसमिद्धे रत्ना
रुतीना ७ स्वादा ब्रह्मा ३ रं ब्रह्म प्रति सा मनसो ब्रह्म वा नः ब्रह्म या रुता ७ द विषा मा मा
स्वा। अतिरिक्तं क मीमा
दा कृता कृति रे तु रे वा
पुनः न मत्त नु कं व या
प्रति नं नेति कल्प यां
रे वा अति पा ३ या निना वा वा वित्त या तं रे वदे उ नं अ वा वा यो नो अति उं कृ ना या ते। अ
म तास्मि न् म उ त स्तं नि ये त न स्वा दा ब्रह्मा ३ रं त तं म मा पः स्त र ता या ते पु न अ

स्वाध्यायीतत्र च वा यस्मिन् ते। अथाऽस्य मुद्रा तत्र विरतेषु मण्डलस्थानां कुतस्तस्य
 मुद्रास्तत्र तत्र वदन्त्यानां ब्रह्माणा इति उच्यते अतस्त्वपि पश्यन्तो ओम्। तत्र तत्रादेव देवतासु
 यामि गंमि ओम्। तत्र तत्र
 मन्त्रास्त्वन्मन्त्रा मन्त्रवि
 ता लोपयेत् प्रयास्य
 स्वीकल्पनाम्। अनाशा
 केतव्या कल्पयत इति वेदोक्तं वा तत्र च वदन्त्यानां मन्त्रा इति पुत्रपत्न्यमितो योऽर्थो
 त्रुः पुत्रपत्न्यमिते। अथ केतव्या कल्पयत इति वेदोक्तं वा तत्र च वदन्त्यानां मन्त्रा इति पुत्रपत्न्यमितो योऽर्थो

ॐ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥
 कलामनस्य ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ कलामनस्य ॥ ३ ॥

३५

५१

स्यो जानिमा कृत्वा स्यादे पते यादो यादु पते। स न स्यु क्त्वा वा कः स्यु वी ३९ स्यात्ता। ३ वा याम् ३ वा
या तुं वि ता मा तु मि त म न स स्य त इ मं नो ३ व ३ व ३ या द्वा ३ स्यात्ता। वा वः स्यात्ता वा ते यः १३ स्या
दा। व स्यो धी नां कु नो ति द
था ना म अं लो के पि न्ने
ओ व स्यो धी ना ते क स्ये
व तुं यो पु ना नि रु ति म
प्रो ति। अ यो ३ यं वै
सं न्ने तु याः स्य व म स्य स्य व म तु याः पु ना म स्य पु ना म तु या म कृ त म स्य म। मे न्ने जा ग
या व यां ३ रि ३ दे वा रु ति ओ मा न्ने यं तां ३ रि ३ गा यां ३ रि ३ मा स्याः प त वे मा न्ने यं तां ॥

॥३॥

अपु पस्परा। प्रति वार्तिरिमाः परा वो मा कं र्थं तां। उती वार्तिरिमा पडु बंध यो व न
स्प त यो मा कं र्थं तां। दु धी र्थांतिरिमाः स्वं व ह्म नो य रु पति मा कं र्थं तां। स्प मु ई रुः प रिता
मा कि ता र्थां यो नि म
तम राः। रांति न स्ति ति
मे वा कि नी व ति। म स
तमः। त स्या म्मे रा स्य।
न ना सि क र्थो त रु
रा। अ नंत र्ता म वः रांति प्र या रु मा म स्या म्मा म्मा रा व रु म्मा त स रं म तां सि धा र्थं य र्थां
र्थांति न तां। प म र्थं स प त ते सि यै। इ ति प्र यो म म र्थं स मा त न। ०१०॥ स्त्री ॥ - ॥ श्री ॥ ०१०॥ - ॥ ०१०॥

पि ग रु ता। मा रुः ३ः प्र क या तु या र्थं मा प ना स्य वि म
ति वा र्ता। रा र्थं प्र ते स्य न स्य ती। गो ष्व रे ष र्थं स्यु। ते म
म। स्थि न स्य ति। रा स्य न स्य ता र्थं
त स्य ते त की रा स्य स्थो तु कि रु ता मा तु या स्या। त य
य मु प स्प रा दि र्ता म मे त ग त सि र्थं मु वी कं ति ता व
॥ ०१०॥ - ॥ श्री ॥ ०१०॥ - ॥ ०१०॥



अष्टाविंशति प्रह अष्टाविंशति ॥६॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[Faint handwritten Devanagari script at the bottom of the page]

[illegible]

[illegible]

... तं मलो काः प्रारिरो रिरोस्य पना वता विवतु ...
 ... वथं ह्य ३ रं नो ३ व प्रतिरु यन्नि कां । प्रका पतिं प्र य मं य ...
 ... यो कृतं य म थं । न्या नो ३ काल उरि । ॥ १४ ॥ वा री ...
 ... उ नाति मस्ये । यो ना य डी रो रा त ना य ३ कस्ये । ॥ १५ ॥
 ... वि छि ता नी । प्र का पतिः प्र य म का रू त न्या न च र ...
 ... वि नः ॥ ० ॥ ० ॥ ५ न्य स्ति नो मि मी ता म वि नो । त म न्य ...
 ... ॥ १६ ॥ न्य स्ति पु षा म न्य नो ३ था तु नः न्य स्ति आ वा धु ...
 ... ॥ १७ ॥ न्य स्ति पु षा आ वा पृ थि वी त्वा ३ रं । न्य स्ति रो वा रा ज ...

[illegible]

। श्रीगोविन्द (मिल) ३, श्रीगो. श्री (०५०॥ ---- १० ----

[illegible]

[illegible]

॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ २० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

* १७) विद्याविधि विधीवीर अन्तिम

३१५५५ श्री गुरु काया
निर्वाणाय नमः

૧૭૧૦ અન્ના ૪ અપર્ણ

१०१५४, ३४९५५, ३४९५६, ३४९५७

（一）... 1917

11. 11. 1897

आद्या पी वामः प्रज्ञा अकृशास्यो अस्पृश्या अक्षि

। रीतिव्यक्तं त्वात्मा मासी मीरु कुरुकुल

॥०॥ एव वस्यं। संकटां कुरुते। ॥०॥ एव वस्यं। ॥०॥

ह्य पञ्चाङ्गान्तरं पञ्चमं तन्मन्त्रं तन्मन्त्रं तन्मन्त्रं तन्मन्त्रं तन्मन्त्रं

असुतीरु वेसुगोतुनःसु त गजोथुतु नानास्थीनः ॥ ५०० ॥

तु वी १० रात काय सु कर्मा। तास्से रा केस्य मृत ताः १० रात काय सु कर्मा।

[illegible]

मन्त्रोक्तं श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तस्यैवात्म्यं मया मीमांस्यम् ॥ न संतुष्टं भूय तमुवाच अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १ ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रकाशयति यश्च मन्वातात्तौ ॥ २ ॥ अथर्ववेदप्रतिपादो न तिमिरात्तौ ॥ ३ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ ४ ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पवित्रमर्को ॥ ५ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ ६ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ ७ ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अक्षिमाथ ॥ ८ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ ९ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १० ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अक्षिमाथ ॥ ११ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १२ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १३ ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अक्षिमाथ ॥ १४ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १५ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १६ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अक्षिमाथ ॥ १७ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १८ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ १९ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ २० ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अक्षिमाथ ॥ २१ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ २२ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ २३ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ २४ ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अक्षिमाथ ॥ २५ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ २६ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ २७ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ २८ ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अक्षिमाथ ॥ २९ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ ३० ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ ३१ ॥ अथास्तीति पापेनाशाय ॥ ३२ ॥

[illegible]

विष्णुलीलितत्रयः स्वातन्त्र्यात्मा नारायणः
पथं पश्येत्तु वसतिः कृता गोसा मन्त्रेण
उषां तु तु वधरा दम् वा कृतां निमां वेधीर्न स
स्थानरपतिपुत्रो मी वगुत्तो राया तु तु वधरा दम्

[illegible]

મ અંશિલે ૭૮

॥ माता सा र्म वेत्तु यं पुनर्तीन माता त्वा प्राणा वा नात्मा बलं मातर्नती प्रियां कं वा ना ॥ १ ॥ त
 मा मे स ले यां च त्वा मोक्षी त पन्थाः पनस्यसी क्षती न ऊः स्याद मा ना म ना तीः स्या जः स्य म
 त मनु प नी क्षि त दया त
 वि स्य स्य इ ति ॥ ५ ॥ मि त
 न मा न न स्य व स्य नं क
 ॥ ३ ॥ अ नं व स्य ने नि वा की
 उ वि ना ॥ ४ ॥ स्य व स्य मि ति
 मि ता स्य नं म न्यं गृह्णामि ता म नं प्र का प ति ना त्वा मि न्यं गृह्णामि उ वे त य स्या प ति उ वा मि वि त य वे त य
 स्या प ति उ वा मि वि त य स्या उ वे त यः प ति उ वा मि वि त य स्या उ वे त यः प ति उ वा मि वि त य स्या उ वे त यः प ति उ वा मि वि त य स्या उ वे त यः

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अ क या उ रं रां ते अ क्तिः सदा ति न स्तु रां मा वा न्ति
मंत रि म्भ सदा वा ते न ते रां ते व त स्यः प्र डि रो त द
नी त्प उ रं ॥ या रे वी स्व त स्यः प्र डि रो वा त प नी न ति
हा म न स्य मा र था मि प्र या म्भ पू त्ति न्ति प ना रं ॥
नी त्प उ रं ॥ अ म्भु वि रा म्भु न्ति ता र व त्ते रां पा
व वि र्मो नां अ पा तु त्ते स्य कृ त स्या लो के वा नि द्दु

सुतामृतं तमस्योवाध्यायताते वाअमुं वं ब्रह्मकुं नो नमः ॥ १ ॥ वमरुमिर्मंतेति यागादका
मिरांस्यात्ताउको मुं वामिवज्जामस्थं पारोत्ता आवापुषिवीत्यांस्थनस्थता ३ ॥ ५ ॥ वरु
स्थतेयुवमिंद्रियव
वते की न ये तत्तायु
शा नं प्र य मं पुनस्त
अस्याविष्ठाः सत
सुष ते न र्तामौ मंत नि कुं वि सतु पमा वि दे रा त म के र त्त वीति व र्ण व्रह्म स तं व्रह्मा ता य
नं तां त ता व्रह्मा ता ३ ॥ ६ ॥ व्रह्मा ३ वा न म न या ता व्रह्मा वि र म र्क ग ता व्रह्मा ता ३ ॥ ७ ॥ म र्क ता व्रह्मा ता ३

मार्गस्थितिः॥१॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३ वि तं वति ३ विल्या

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मां मे अमिउताउ ता उाप्रतां पुक् रुयका। अ पपनासु नया ॥ मेथा गुंथ देउ नया

आराधनैर्वीमेधास्य त्रस्यतीत्यामांमेधास्य त्रिभुषितावस्थायां॥ — आमांमेधास्य त्रि

५०

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वागीश गतो भगवन्महाभक्त्युत्तमः ॥
सुप्रतीका कुबला ॥ ० ॥ मयि मेधा इति विवर्तितं ॥ अथा ते प्रथमं वासुदेवम् ॥
विदेवमभ्युपसंगेन उवाच ॥ तं ताता तनूः सुदुर्लभं ध्यायन्मनुजानां तत्रिदं ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भागवतस्य प्रथमोऽध्यायः ॥
व पश्यि के रा र म सु व र न्या मे मु र्प मा न मा यः प्र मो षी ॥ इ म वि वा मि व त्रा रा स्य
पा र णि रा म व र णि
लो के स्थो नं मे स्य
मु षा । य । रा । स्य । रा ।
त गो ना मा य मा म
म नु षा वा वृ त्तै । न मः रा म मं मं ता त्पा नं मः स्ता त्तो दे व ता त्तो । या मा ति या
दि । ॥ ॥

अङ्गु नारु वरुण मंथो मंथ वेरु वरु अरानु वि को यो मानु को मंथः स्या मा विरात । स्या ।
मातनु ना विराति को मातनु ना विरातु यो मोषे लाय मा । तत्स्य न मा ना स्य न स्य न
स्या मा क नो त्रु स्या म
त्रु । अं ना ये रं विरवा उ
म रक्त या । पत्रि न रति
स्या ७ ना य स्यो । प लो
दि रं । मा ये रं उ रं वी कि पृ त ना कि स्य ला स्या नं थ नं क र्ण स्य वीः स्य मृ दि रं रं यो रं
री ये या । ३ रं मा दि तं स्या नं । वि रं कं व स्या ना कं वा थि ररी य वि रं ग रं रं रं रं रं

॥ मा॥ अंतुं ज्ञेयं वा निपातः स्वाक्षा विमायंतुं ज्ञेयं वा निपातः स्वाक्षा प्रमायंतुं ॥ ३ ॥ मा॥ अंतुं ज्ञेयं
 रा मायंतुं वा यरो कने स्था नि स्वाक्षा स्ते या वस्व स्था नि स्वाक्षा तं वा त म प्र वि रा नि स्वा
 क्षा स्था मा त म प्र वि रा स्वा
 त्वा यि म्मे स्वाक्षा या वा
 ५ वं मां ज्ञेयं वा निपातः
 प्र मा यदा स्वाक्षै वीः प्र
 स्वाक्षि प्र कथा मा तनु
 प्रत्यु म्मां ता यि य स्था नि स्वाक्षि किं नि वेति वं वा ॥ अति प्र प्र स्ती ३ त ॥ अस्मा मां मि ५ मु त्तुं अं मु त्तुं अं मु त्तुं
 त्वा मां द्वा त्वा यो मु त्तुं यति ॥ अं मु त्तुं वा ३ मु त्तुं दः सत्तुं पं वा ॥ ४ ॥ त्वा यो मु त्तुं यति ॥ अं मु त्तुं वा ३ मु त्तुं दः सत्तुं पं वा ॥ ४ ॥ त्वा यो मु त्तुं यति ॥

क्षा स्था वत्ता म्मे या ३ तं तस्मिं ह्म द्वा स रा स्ते जि त म्मा
 पः प्र व ता यंति
 या वा मा स्था मां मि ५ मु त्तुं अं मु त्तुं अं मु त्तुं
 धा त्वा यं तु स्था वत्तः स्वाक्षा प्रति वे रो स्ति प्र मा त्वा
 कु वी ३ ३ ॥ ३ ॥ मु त्तुं यति ॥ अं मु त्तुं वा ३ मु त्तुं दः सत्तुं पं वा ॥ ४ ॥ त्वा यो मु त्तुं यति ॥

[illegible]

एतां पतिं श्रीं ब्रह्मसूतेनंतापुत्रं श्रीं लक्ष्मीं तामस्यै सवित्रुः सुवाभ्योनव रुं नव
 तिस्रं राधिका पद्यत्तः सु मनाः सु वचनं श्री वसुदेव कामास्थो नानां नोत वद्विपे
 देरां वतुषादे। इदम
 स्थिवाश्वसिनामादे
 कावकेविभुदेवाना
 द्विषंतं नारायंतु
 कंसात्मां ना
 तयामरा
 तत्त्वमस्थां वयोऽदे। मयो मन्ममस्तु पति गृहीते। कुरुं कस्मा मरा
 त्। कामः कामा या कामो गता। कामः पति गृहीता। कामः सुमुत्तमा विरा। कामे न त्वापति

अरुणसिलह ० ॥ अरुणसिलह ॥ ० ० ० ॥

[illegible]

वर्णमया तवा मां ते मनः प्रविरात् मां च ३० श्री
प्रश्न क्रमस्तुते। मयदे मयु गादे किन्दा ज्ञानाय वा

६५

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
आरुतुं। यद्वितौ देव गंधर्वौ ते तस्य वनि नोऽस्यः स्यात्सामितेन मंगानि वायुना पश्य माप
३३ मां वै व पश्यस्यु -
विदे गंधर्वौ विविदुः
आः। न्यो मो ३३ दं
मि मरु म यो ३
दिरवे स्या तु तस्य ३
नसं मया पद्यम कन ३ सि र्थि या सः। त गो म र्थि मा स्य वितो ३ र्थि मि मां ला ३ र्थि मां पत्मा।

३८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पवित्रा मे पुनर्व्यां विप्रश्नस्तद्व्याधीमादिथिषु द्वाविंशतिविवेकिते तानि तं गुणव
तः ॥ अथ मे राधे मदते सौ तगा यत वर्यं म्मानु त म्मानिर्णतु स्मिन्मास्यपत्न्यश्च य म्मा
कामा वारातु याता
सो माय क नि वि रे स्था
ना ॥ कं नालापित्तो
वेतो मुं वातु ना मुतः
स्य ॥ ३० ॥ अय मी तु व
तु पारादा त ३ याश्च का व ॥ गो नु म न तां य वे याश्च स्त्री पौ त म प्यं न नो दा स्वादा ॥ अ की व
॥ ॥ ॥ तगा मि ३० ॥ ॥

मति ति स्मो — म्माश्रयि म्मा क यो राधो यो ३०
ना गंधवी — या क नि रे स्था ना ॥ अ क यो क नि वि रे स्था
यती पति लो क म दी का मु दा स्व स्वा दा ॥ ३० ॥ सु या राध
धु वं म्मा तः स्म त्ता रा वे द मिं ३ मी कुः ॥ ३० ॥ त गा
३० ॥ म्मा चै त प्र व मो दे द ता नाश्च सो स्मो प्र कां मु व त्ता
३० ॥

२ भा। मां निरुद्धाया तां गार्ध पत्नः प्रकाशस्यै नयात् त्रीप्सो यो मं मुरुनो मं पत्नः
की वक्ता मुरुमाता वै तस्मान् ३ मति प्रजुथा ता मियां अ मने यो गार्ध पत्नः यो ३०॥
ते गुरु निरि ज्ञाप

स्थु न मा वधि ह्या की
स्थ मा नां प्र का पत
ज्यां री त्ति स्म मि

उ ह्या ३ न्म त त ३ ३ त्ताः स्म विरो तु। मा त्वं वि के
व प नी पति लो के वि नो क पर मं ती प्र का म्म म न
अ ३ ३ अ परा स्मां पौ त म्म लं पा आ न म्म त वा
वो क्मं ३ दि — पतिः पति म्मं वा मि पा ३०॥

मा। ति ह्ये म मर मा न मर मो व त्द ३ स्थि ना त वा मति ति ह्य पृ तु न्म तः स्म द्म त्द पृ तु ना या तः

नः पितॄन्पितामहं प्रपितामहं च
 नेष्टस्य धानममः ३ मष्टस्य मुं ३ शततथा

धो। प्लुतं उक्षमा
 मं ॥ ॥ यो वधुः स
 या ३ वान्तं तु यत्
 नौ त्वा प्रवक्तुता ३ न ये
 ३ यमा वक्तुता ३ ति। सु
 न्दी नो न निष्ठात्मां नो पां

गं लोके न ह्येतत्। पञ्चमा
 नमुह्यं वाचमानं तु वनस्य म
 मतिरिति कनाया ये मादित्योऽपि न मे यो
 इव न तुं या क्मा ३ यंति कना ३ मुन। पुनस्मात्मा ३
 मागता इति पुषादेतो नयात्तु न स गृह्यात्वे
 न मन्मात्तु गृह्य पनीया वा स्यो वदिनीर्द्वि
 मं पंधानमादृक् मति सष्टस्य स्थिदा न तीया स्थि
 विंते वस्तु। या कुषथ यो या व न स्य त यो या न सो

१७

आनिथ ब्राह्मणे वजा लेखा वतु प्रकापती प्रवे मु० वतु ३५ स्यात्ता तत्रा वयसि कस्य ३५
 न स्यात् ३५ प्रमोः कीन व्ही वीन वतः स्य वीना द्वा र्ना र्ना र्ना तौ प्यु त मु र्ना मो गा न्ते वृक्ष ३५ मनाः
 स्यां वरा मि प्र का वती ३५
 रास्वि नी वृक्ष व वृस्विनी
 इ नो स्य रु स्य ३५ मि गा
 स्या स्वि द्वा मा ते। पथं ते
 पो नो पथी ना ३५
 थु वो सि थु वरि ति थु व म सि थु व त सि थु त न स्यं न क ता गा मि थु सि थु मा पा र्ति व तं ना त न स्य
 स न पथः ३५ म मां रु ति क ना म र्ना थ ती। य थु व ता ३५ न न न ३५ प र्ति क ना म स्य यो गं व र्ना ती य म स्य

अ अक्षिखिलम् ॥

मं मेथल स मी त्म उं धती त्म उं धती ॥ व ३ र्श याति ॥ अ ग्रे पा या रि व ते त्वं रे वा नां पा या रि व ते
 व ३ र्श याति ॥ अ ग्रे पा या रि व ते त्वं रे वा नां पा या रि व ते
 गोमि वा या पा या रि
 प ते पा या रि व ते त्वं क
 व ना रे वे ति कु कं पृ धि
 त्य व ल्प रा दि व यं ३
 मी वा न् प र्श मा कु या
 मि कु ति प त् ३ ३ व ३ र्श या ते ता गो क न् पा त स्म दि दि की वा ३ र्श या ति वि अ यं तो ३ ३ र्श या ति
 मी वा न् प र्श मा कु या
 मि कु ति प त् ३ ३ व ३ र्श या ते ता गो क न् पा त स्म दि दि की वा ३ र्श या ति वि अ यं तो ३ ३ र्श या ति

१८

१८

अथा खं व न स्या

एव परातिर्यस्य न स्यात्

नं ७ तैस्य पराति

रास्या विद्वमाना

ते वीर्यं गोतिं तु या

द्यो मस्ति वीर्यं तु या

प्रायुक्ता या व रस्ये

मुथी ३ वः कं मु तपतिः

हं कुं को त्पु वि तः रात वल्गु रो वि तो रु स्ये व मं १५ तै
 स्य परिल वं तो त् वामि १५ मं स्थान रा स्थान
 मस्या स्यात् प्रत रागाः स्य वीर्यं गोतिः स्यं न
 स्थाता ते म यातु के दानि दि वः पृथि व्वाः पति ३
 म्या ३ वः कं मु तपतिः पृथि व्वा म यां म पा ३ ने ता ३ सि कि व्व तो १ तु वो या शं स्य व क स्य

५०

यनेता॥ या तानि युतिः स वसेति वा तिस्रि विमुर्धनं कथि पुरुषं किंवा मये न कुरु वेद वा
वाभीं स्यं मो मनः स्यं रु उ या नि स्यं का मः स्यं त न त वः स्यं ता का म स्यं यो के ॥ १ ॥ अ स्यं ३ स्य
न ना या ३ का रु विः स्यं स्का ना तां मथो म न्य त म को प स्यं प्रा य स्यं तं म नो म नो ति न या स्यं के
अ उ स्मिं ह्य स्मि नो गा य ली मिं ता रु ती का रु ती व स्यं ॥ १ ॥ स्यं म स्यं स्यं रु ता ॥
इ से त्थो व प उ नि से त्थो ते प क उ ति से नि कृ त्थो को ना थो दी वी त्थ स्यं रु त्थ
र थो ॥ स्यं म थो स्यं व त्थो त्थो ॥ अ त इ उ त्थो म न्ने स्व स्मिं का म्मा ति गी ति न
ना द्वा तं पु उ प स्यं मि तो य त्पा रु ता ॥ तु न म्मा ये न त्थ स्यं म्मा नि नो म्मा के
पा नि नो वि न्ने वे रु थो या रु पा नि वि ता व स्यो ॥ स्यं व पा नि रो त्थ त्थो पा नि नो म्मा क प क
या ॥ स्यं त्थ ले म्मा के पु न्ने रु ति ता ॥ १ ॥ व्मा रु त्थो व्मा रु ता ॥ १ ॥ स्यं म्मा रु उ वि रु ॥ १ ॥ स्यं यं व रु

अथ लिखितम् ॥







[illegible][illegible]

यस्य नो मयि च येन अन्तरं लेना मनवेत न स नमः
कृष्णानि न रा मरुतलपत्तः ०॥—॥ रसीपत्तः ॥

[illegible]

विमानेनातवति बुद्धिविहीनवितासदांगेनामातश्रीनस्तु। सदासदासदा। वा।
यज्यु कसुतिउयुक्तुनाकुंरिगाममनमालपीलंतितस्या। वा। वा। वा। वा। वा। वा।
तबुद्धिथमाधमासप
वा। सदा। सदा। सदा। सदा।
पदाजिगे। तववाथव
रा। प्यं। सदा। सदा। सदा। सदा।
मनेवसोसदा। नानावि
नसमा। ममं। वना। नाना। बुध। ररा। मनेतदंती। पता। यदि। यो। मल। यता। अरा। सी। व। ३०
सं। मं। नो। स। नाना। मति। क। स। प। नं। प। स। न। वा। नो। म। र। व। दं। थु। क। ल। दं। ३। अ। नो। रा। नं। ३। नं। ३०। सदा।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यत्किञ्चिदपि कर्तव्यं तत्सर्वं त्रैलोक्ये ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 तदा मोक्षं च प्राप्नुवति ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लेखके ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 तौ तपस्विनौ स्तौत्यावदधु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यो नरास्तद्गुणैव ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 रथाऽन्तर्गतं भवेत् ॥ १ ॥ अरात्रास्यसीत् ॥ २ ॥ अरात्रास्यसीत् ॥ ३ ॥ अरात्रास्यसीत् ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

तं तं तं गुरुभाषा ॥ नाकं वा तं यं नमं पुत्रपीठा तं नु कथं तवे ह्या वत मा क्व शा न् ५५ ॥ तं गते रति न जा
 र्ज तल तं तं तं वं ला तं ग का खा नो दं तं तं मा स्य राल पुत्रला तं व वं ३ स्या ० तं गति पु थो ॥ ५५ ॥
 निथिने ३ं यी पना तं वं न रा तु ॥ ३ं ३ स्या ० तं गति पु थो ॥ ५५ ॥
 आला तं मे व वा व स्य स्त्री पुत्रला तं व वं ३ स्या ० तं गति पु थो ॥ ५५ ॥
 ना कत यं तं तं मा स्य तं न कति यं क यं तं तं वं ३ स्या ० तं गति पु थो ॥ ५५ ॥
 तं ५ ना क पीठा मि कल दं रा स्य नि स्त्री जिने द नो विरो थं वं ३
 के ५ ॥ ५ ॥ म न मं रा त तिते ३ ० न क नी उ क्क रं तं व वं ३ स्या ० तं गति पु थो ॥ ५५ ॥
 स्त्रीला तं पुत्रला तं व विद्या ला तं तं जे द वा के मा स्य व त या नु थो ॥ ५५ ॥
 र स्या ० तं गति गुरुभाषा ॥ स्त्री निमित्तं तं यं स्यै यै न क्क ता त या नु क्क वं ३ स्या ० तं गति पु थो ॥ ५५ ॥

निधने ३० यां पनात्त वं न रा तु ॥ १० ॥ वं ३ स्थांति म ते ॥ ११ ॥
 कालात्त मे व वा वस्वस्त्री पुललात्त वं ३ स्थांति म ते ॥ १२ ॥
 ना कत यां त था ॥ १३ ॥ सुतो ३ म्भित यां क यमी ला वं ३ स्थांति म ते ॥ १४ ॥
 ते ॥ ना क पी डा मि मल मं रा स्थांति स्त्री जिने द नी वि सो थ वं ३
 के ॥ १५ ॥ म ना मं रा तु ति ते ३ ॥ ३ ॥ नी उ रु उ रं त था वं थ वं न म रु
 स्त्री लात्त पुललात्त व विद्या लात्त त जे द वा रे मा स वं त या वृ थ्री तो
 से यो न रु स्था त था ३ ॥ व रु ३ ॥ म वा को ति तो म स्थांति म

[illegible]

म

वा जातिनामो नंत मतिमु ३५॥ रक्षी नारां कलध वैवृ अ नारां सयंत मा ॥ अत्रा नारां
पो वंथ मुया आदो वने रा निभा न वि अ नरां स म आला त वा त व मा धिन क मा का ॥ पु ल मित म
आ यो म नारां नंत मति
मु न म न म मा यो म
र म रक्षी अति स त व ग
वि अ नरां नारां पी डा
न ३५॥ ३५॥ रक्षी वंथ क
नारां नंत मति रा री ॥ ३५॥ वि अ नरां कलध वैवृ अ नारां सयंत मा ॥ अत्रा नारां
वा नंत मति मु क आ पि ना ॥ ३५॥ नारां सयंत मा ॥ अत्रा नारां

[illegible]

न नीति न रा ते तं गा व नि रां व रा वै न त म ते न रे ॥ १ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ वा व नि क का प्रा णं स न य गा व रं ता नि त ॥
र धा न ला त म का नो ति रो वै न त म ते न रे ॥ १ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ अ व ब्र थ वी लं ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ वि कं न र्ज ला तं न वि आ ला त ॥
त धे व न ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ स मं व लु सं
रा नी न के रा स त व ॥
वा व अ ना व र स ला तं
त म ते न रे ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ रा
व वि नो ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ अ र्भा
ना नु रो त नं ॥ व र स व वा
रा स स रो त डा स म मा ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ वि नो मं व वै रां न रं व ब्र थ स मा त म ते न रे ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ अ क स मा
५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

हाल पात न का रमा उ धनि रा नां न के पि ध के ता पीडा बुध स्मांत मति परमा परमा
ला त म का रा ॥ थ म का ति स्त्रा न ती ॥ मु उ रे वा ग्नि पु का न बुध स्मांत मति मु उ ॥ १॥ ज न के वा क
तो वा धि ना त ना रां व
म अ के तु च ल व का ते ॥
रं के तो रंत उ रा व ल ॥
वंधु तिः सो स्मांत तो ३०
ना म वा य स्त्रा ३० सं के
दि ता र्क्षी ला त पु द ला त न के तो रंत मति रा री ॥ ४॥ जो वे ॥ मां स्त्रा न सं वा उ वे वा क्ति ला त न के वे वे वा

रात्रीनगसु नोगसु के तो नंत म ते क के प म ॥ १ ॥ न व सु स न य न वै व न न पी ठा व ता म स नी ॥ १ ॥ दे क ता म न डु
पु दे न के तो नंत म ते क पी मी ॥ १ ॥ वि के नै ॥ स न स न यो म न क पु क न क प पियां ॥ कु ल रू डी ॥ १ ॥ त स न यो
म के तो नंत म ते क मु म ॥ १ ॥
न वै द क य म के तो म
ने क पी उ क न री त ॥
स र स र डी स न ग म
ते ने ल क न ते ने म ॥ १ ॥ रा त न न त धा ला त न का म ला रो त मे व व ब डु ॥ १ ॥ स न व म न म न र
क र धा न त ग ते न वि ॥ १ ॥

२० त स्तुतुमुपु का ७ न वरुने व तीक्ष्ण स्तुतु वामाथ निष्क म्मास्ति नीति ताऽवा स वदा उगा वा गुण मे ताऽ
 ३२। ३ का ने न विप्रो व रा स्था ४४ स्था तीरा तत्ति वक्त्रे व नो दिगी लय उक्त नाथ व पने मथा मं वा क्त रो वा स्तु प
 निवर्क ये ल ॥ ११॥ कृति का रित यो ३ स्था तं ३ मां रण प्रका डि का म प्या मे का उ रानै व ली गि प्रे की गि को उ रा प
 स्था तीरा स वि रा सा री को
 म ॥ ११॥ वि कं ते ली गि प्रे
 ला वा ती पा ते व प रि ज्ये दे
 ता व ल गं ता भ ते ता स्था ल यो ३
 ॥ ११॥ स्तुतु वामाथ निष्क म्मास्ति नीति ताऽवा स वदा उगा वा गुण मे ताऽ
 ३२। ३ का ने न विप्रो व रा स्था ४४ स्था तीरा तत्ति वक्त्रे व नो दिगी लय उक्त नाथ व पने मथा मं वा क्त रो वा स्तु प
 निवर्क ये ल ॥ ११॥ कृति का रित यो ३ स्था तं ३ मां रण प्रका डि का म प्या मे का उ रानै व ली गि प्रे की गि को उ रा प
 स्था तीरा स वि रा सा री को
 म ॥ ११॥ वि कं ते ली गि प्रे
 ला वा ती पा ते व प रि ज्ये दे
 ता व ल गं ता भ ते ता स्था ल यो ३

निमेषेनैव त्रुव श्वासेन वषट्किं नित्यं ॐ परायण्यते सुन कर्ता उभयं सुतयु के द्वितीयां सुतयु
याकं मी॥ युष्मत्सु रथनि कथनं तोगी॥ ५॥ चिबु केन दौ॥ ५॥ दीनां मज्जमदं का नी॥ क न विना
थि॥ ३॥ अदेदी मा नः
सुतयु तो॥ ३॥ वरुके
नीवे॥ ३॥ वरुके
वैपितानि सदा न्ना
राम्भु क्रिशाभा॥ वरुके॥ ५॥ मत्परा लिखिता त्रु यजथ कथां न स म्प्रदिशत त्रु के न के

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ स एव मे नमो ॥ २ ॥ ॥ विदो दविर्नवनी रस्ते दे वी प न र त थ का न इ य वा न्ना पं च त
 रा व वे ला य या ता यां व रु ला त थ ॥ २ ॥ अ ए मे न दो ॥ ॥ अ ल प वा द न दा न्ना कु त म रा न थ
 अ ल पा यु न रु व र्ण के ले पु ण्ण य ध रु त अ ते न रो म दा न्ना ॥ ४ ॥ पि न रु मे न दो ॥
 थामि मं ब धि म्भ स व व ता नं त म्भ उ व र्ण के ले पि त रु पी य ध अ नि की र मे पा प
 अ ते पि त रु रा म व त दी न म्भ ॥ ५ ॥ पि र रा मे न दो ॥ ॥ अ ए रा र व वे व रु वा व
 ल म्भ मा द्वा थ न दा न्ना की ति मा न्ना व रु ना क र्ण के द त व ति म्भ म ति मा द्वा थ न दो
 पा प अ ते मी व के ले क म्भ की न अ थ न दी व म्भ ॥ ७ ॥ यो का र रो न नो व रु म्भ म्भ व रु म्भ व रु
 दा नी ति मा न्ना पु त दा न्ना गु उ अ ते रु व र्ण के ले वा द न दा न्ना ॥

[illegible]

स्त्रिचिन्मता यार्तिवृत्त

स्त्रिचिन्मता यार्तिवृत्त

स्त्रिचिन्मता यार्तिवृत्त

स्त्रिचिन्मता यार्तिवृत्त

ती। क्वचित्को पवती। तन्ममो लंति नंतवता। वृत्त
साहय वृत्त। वृत्त ससो तपं नश्वितित दानाये क प
स क म र त य क्तो र त दीगा वरा ता स त न म र
र ता ता नि ग र सा म य र्ति प्ता वि दे क ल वा न्

मं नाना न वि यम आ न क कु थै र्वै य वि स्या र्त्त सं प न न स त्कं म क त्वा सि व पु का क्त्वा ता म्भ स त्
 दि ष्ण ना क यो गो शो न वा न्ना ॥ ५ ॥ अथि क ता नि ड वा न्ना ष ट्ति र्वा व र्धे दि थ रा जं न म्भो
 त त्त पा र य ते। सी न पा
 वा न्ना स्यो उ न न्नी न्भ
 तं नो म्भ स त्क म्भो न न्नी न्भ
 स्य स्यो न न्नी न्भ ॥ ५ ॥ अथि क
 ले यि यि रा स्यो वि पी ड न ना क प्र स्या उ ल। त न ता दा यि ये ब ल य ते स्त्री व र्णा म्भो न न्नी न्भ
 पु र्णो स्त्री व र्ण य ते ये क ता न वा न्ना तं गी। ल व य म्भो ॥ ५ ॥ अथि क ता नि ड वा न्ना ष ट्ति र्वा व र्धे दि थ रा जं न म्भो

पको नमः नाके के तु यते अर्धशानिभवन कमरात्कलरु
अम्बिमां आतिशोगी। तहुरुकु पाठिकलमंडल पादय
पुर्णपेलानासु तयते बलवान्मानसोगपाका ॥ ५॥
भीपाखनेलभदाविंरावरेस्तीदुतश्चस्तीलोलधस्ती

तदा काठिपुगंडुभरुही सुलेन बंधुनन पत्रिता गी। स्वकेले स्त्री च दीप्ति यथा अत्रां देतां दुरुत्ता
ले दीप्ति यथा। अपि नदसे वंदे ॥ ५ ॥ बरु सुतदा न्ना पुंसादा न्ना कीप्ति यथा अत्रां देतां दुरुत्ता
पकेले तामा दीनभ
सा हस्तिरा दवे तीर्था
सा त्वां सनि नलक्षकी
क ससिदिभ पाव
लाते वंदे ॥ ५ ॥ बरु सुतदा न्ना पुंसादा न्ना पको पक्षी। पं वारा दवे पुत्र पुत्रा वरु प्रात

लो यो गमता वाधि यै बलक्षीने बहु थन का यो न बल युते लो त वा न्ना लो ते रो वं
 नि को वला त अ रु क्त यु ते न न दा रु न यो गम के ल वा न्ना बहु वि आ दा न्ना मे न क क न न क
 म्मा वा न्ना ॥ म्मा ॥ क य
 रत्नो नो म य क्तो व
 रा त यु ते पा प लो
 रत्न १ ३ रा रु ते त
 मे रे रु द्वा गं त द ति
 पा गि न न ग म रु रो ब ल दा न्ना मु रो को प दा न्ना रु मा न रो य म्म थ न दा न्ना न प ल ॥
 वं ॥ ५ ३ रो क न उ मा रु क्त य को पो प द व स रु अ
 ति ल ज म्म म क्षी न थ रु त यु ते वि द्वा न्ना ३ या दा न्ना पा प
 क ज रु त यु ते से न लो क दा न्ना इ ति वं ३ पा ल ॥
 वा था य वि ती य ॥ ५ म य क्त वी ल ॥ ल के तो
 रु क्त मा ल म्म वो न रु क्त म्म तु थ ल व रु न्ना ति अ न क्त

पिष्टो गभकोथि। उ कनिः। स्थ मरुतः स्थो र्वके ले आ नो मरु तु मा त्व दा न्ना। ना म् स्थ
आ। ज की त्ति। तिः। रीप्पिथि भ पा परात्थ ते मल पा य भ वा त रु ल नो गभ। ॥ १॥ द्वितीय
क के विधा। र्धा नः ३
त रु से न विधा ३ः स्थो
त स पा प य ते पा प को
अतिवा नी। मरु क
ता त रु की। के रा य त भ
प के ता त ना रा म रु र्वस्थ के ले रा त य ते ता त रु रीप्पिथि भ ये य वि स मा न्ना य के रु न भ मि त के

114

हं नमि मां नमः ॥ १ ॥ स न त वे के के ॥ १ ॥ म न रु ति के ॥ २ ॥ अ न मे व वे पि ता नि सां मा त उ न म के ल मी
न म मी मा म न दा वा ॥ ३ ॥ स न के ले रा त य ले मि ले के ले वा अ न वा क्ता मा त उ न म के ल मी
नी के मा त न रा म दा क्ता
पं न मे के के ॥ ४ ॥ न नि य न मे
ल म ॥ ५ ॥ सा त म क म रा
पि म म न का न पि य म
ले न रा म बु धि त रा नि स न म रं थे रा य ले पा वी ॥ ६ ॥ वी उ म उ त्त उ त्त यो म ॥ ७ ॥ व ले के के ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥
॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

यधरातयतेनसोमवा ॥ २ ॥ पुस्यसमेकुके ॥ ५ ॥ सहस्रान्तीनअकल्लातवधिरा
रुहीस्यंतोमअत्तमवृंदनअवतुषा ॥ ३ ॥ पुनअसअपानप्रियअमं ॥ ३ ॥ युतेरिरास्यदुर्वम
तोमी ॥ रुकयतेकंन
तामवांन ॥ २ ॥ पुअस
कुलेकुलेसोमअवात
इंशोमोमदांनारीप्य
तामोमीनअगतमसन्नकु ॥ ३ ॥ स्वकेलेबोषधा ॥ ५ ॥ ३ ॥ रासोमेकुकेमनवल्लतमतादाधिपदलयते
तरीप्योमवतिरोषतामवांन ॥ ३ ॥ अकोनरीलअमुतकिमंन ॥ ३ ॥ सत्कंमस्मिअजकीर्तिप्रतिह्रित ॥

७५

[illegible]

नेतरोमीसप्राकरावर्षेतात्प्रागर्म्मनोन्मकलसंतवर्षावैवर्षा
प्रातिवावर्षेनीवर्षेपावलोर्म्मनोन्मकलसंतवर्षावैवर्षा

कर्मि तं ॥ कर्मि तं ॥ उक्तं इव तो पापं कः ॥ पापं मं कर्मि तं ॥ उक्तं इव तो पापं कः ॥
न वे रा यते न सो पः ॥ अ पावका या ता पापलो कं म मि का ति रु त्त य ते स्व म लो क पा वि शि षा
ती क म ॥ १७ ॥ — प ३ ॥
अ व बु थ प र लं ॥ — प
उः ॥ पि रा वो ज्ञा त ॥ ॥
अ मी ॥ स स वि रा द ॥
पा प मे ले के न रो मः ॥ पि ध पां क नो म म रु त्त य ते रु त्त के ले स्वे के न रो मः ॥ स्व म कां ति दे न ॥

उमातिः ॥ स्वदित्या गमित रास्ते ॥
बुधो ॥ ५ ॥ ७ ॥ ९ ॥ ११ ॥ १३ ॥ १५ ॥
पंचरावर्षे बुरुदिशं
गोविन्दादीनं भुवनं
मुमुक्षुते दीक्षु दोषं
यप-पत्तात्कारकं
न्यास्यन्तां वांतात्तावाधिपे बलं यत्ते तात्
तात्ताधिपे उदले तात्पीडा ॥ तीति

स्वोच्चैतकरास्ते शशं ॥ १७ ॥ १९ ॥ २१ ॥ २३ ॥ २५ ॥
न्याथनदां न्नाबुरुलात प्रथमपापयुते पापकेले अनिनीव
न्यापवनवाधिरुतयुते रुतरी न्नावाक्यमो ॥ विज्ञानं
गितरास्ते धिमा नी ॥ २७ ॥ २९ ॥ ३१ ॥ ३३ ॥ ३५ ॥
बुरुस्यो र्वावां पंचरावर्षे केले प्रत्यथमलातवा
वृद्धिं न्नी प्पियथये यवनि
दां न्ना ॥ ३७ ॥ ३९ ॥ ४१ ॥ ४३ ॥ ४५ ॥
पंचतुर्वेधे ॥ ४७ ॥ ४९ ॥ ५१ ॥ ५३ ॥ ५५ ॥
रुसं वात यवा न्ना गे यवनि

अथ लिखितः

विराजतां गंधमातृपतिः सौख्यं। शोभेत्तं वांकाः सुखी। कोऽस्य वर्षे कामपात्रे मूलेनं अने कला तत्र सा त
वती। गुत्तरा कं यते अने कदा न वाना ता दाधि पेबल यते मां रान्नि का प्राप्ति मां न। नारु के तुरा
नियुते वारु ना नि स वांका
नारायण पति मा ५५-५
विमृता पी। बुद्धि मांका
प्राप्ति मा पक मी। मंत
ती माऽ। इति वा सुया वा
मभक कं न नील कु आदि नो गंधरा नि नारु के तु यते वात सुला डि नो गंध आति रात कल रं। ता दाधि पे
वती। गुत्तरा कं यते अने कदा न वाना ता दाधि पेबल यते मां रान्नि का प्राप्ति मां न। नारु के तुरा
नियुते वारु ना नि स वांका
नारायण पति मा ५५-५
विमृता पी। बुद्धि मांका
प्राप्ति मा पक मी। मंत
ती माऽ। इति वा सुया वा
मभक कं न नील कु आदि नो गंधरा नि नारु के तु यते वात सुला डि नो गंध आति रात कल रं। ता दाधि पे

अयं सिलिअरणी ५००००५

[illegible]

100

[illegible]

...नासंसेगनो॥—अथ यथं न वि कृत्वा कानी॥ पापयुतेतपरिभितावधिबलयेते श्री की युधुव
नेमलपायुधपापयुतेसप्तउरावर्षउपरिविथिवास्यांमसंतवति॥उ—स्वकेले श्री की युधुव
नोमो॥ योम ७३ षष्ठवे
यता रंभपानिकधपंन
येबलयेतेपितृसो
अभवतरी नम
...तिहासिधमबु
मानी गोत पातु कभ योगवांन। बुधुधनवांन। अनेक कीर्तिमबुधु कन पु कभ... ॥

अतेविरोषक ममिच्छिन्ना पापयुते पापके ले क म विष्णु उ प्रुतिभा या ता र्या मा न दी नक्षत्रा
ला ते म नो ॥ ५ वि दान्म पथ न वां न्ना ब्रुं ला त वां न्ना दा त्ति रा व वे अ र्वा तु रु ध ब्रुं य न वां न्ना उ
न क प्रतिष्ठा

क मा धि य

सो रानि यु ते म क ला त थ

स्ति धि धरु त पा प यु ते अ ने क थ न ला त वा न्ना ल म्भ वा
मी दे ब्रुं प्र त वां न्ना अ ने क अ र्वा उ ला त थ वा न्ने
ता म्भ वृ धि ध वं द य ते नि के प ला त थ वा न्ना

वा २० गु २० ॥ ॥ निधनं पतितं मत्तप

उत्तम गणितरास्त्ररुम् — का २०

लेथनद्वयमनीवे बांभागस्त्रीसंतो मध्वार्तिगिस्त्रीसंतो मध्वननक प्राप्तिभागा ॥ ॥ इत्युपे

७॥

रातागविरुतेतादा

मध्वरुक् विलंलिरु

रातागविरुतेतादा

मध्वरुक् विलंलिरु

मध्वरुक् विलंलिरु ते वा स्त्रमयते वो न वं न वां वातरले आदि नो मध्वता वाधिपे नारु यते
ननु तो निधनं वादे रायते न मध्वरुक् विलंलिरु ते वा स्त्रमयते वो न वं न वां वातरले आदि नो मध्वता वाधिपे नारु यते

॥ १ ॥ नीचं बलं ताम्रं धिक् ॥ १॥ पथनेरु के ॥ १॥ पथन वांका बरु कुटुंबी ॥ १॥ तो क न्ध वि न्ध वांका
न सावितो स ॥ १॥ पथन वांका सु सु स ॥ १॥ या वांका पनो पका नी ॥ १॥ वा वि रा ति वे र्के त म स्त्री ला त न ता वा थि
वे उ व लि उ स्ते ने त वे प नी
रा ॥ १॥ १॥ १॥ १॥
सं क ल प स्त्रि धि ध प र्वा
ता वा थि पे ब ल य ते रु
॥ १॥ १॥ व तु र्धे रु के ॥ १॥ १॥
पे न्द्र वा द न प्रा सि ः की र स न्द्रि धि ता वा थि पे ब ल य ते रु उ सौं म य ते ब ले म र्वां र्मे का रि न्द्र

नमः यत्तु रंगादिभिर्लक्ष्यते वा पयते अनिनाने गे कलदीने के लवाय नदी नंभं मत्तु पितृ क्लृप्तान्
 वा कलर्ता तत्र शाखा पंच मेरु के ॥ ५ ॥ बुद्धि मांदा मं लि स्या नापि पतिभ माता ममात्तु सवांदा योक्
 न गारुत मांदा राकाय
 वा पते ते अनिनी न मे
 मांदा पुत्र बुद्धि धवा
 बुद्धि पुत्र पौत्र वा
 क रानदांदा अख वा

सा नो मं लि मांदा सु न वांदा स्त्री प्रका बुद्धि भ त ल वा प य ते
 बुद्धि माता भ पुत्र नाराय त ल रु त य ते बुद्धि मांदा नीति
 अ न यो ग मां भ ॥ प मेरु के ॥ ५ ॥ प्राति प्रका बुद्धि न र
 न्दा ॥ ६ ॥ स त मेरु के ॥ ५ ॥ स्य रा न पीडा रुद्र ल मे ले ये
 अ न यो ग मां की रा ति थ न थां ना सु रू कि म

क म ल रे रो व रु वि त वांदा पु त ता म वांदा अनि नी व से ले पी व य ते क ल र्ता त र भ के ना

११

तत्र संवा नीं रं सनी नभ के त नी नभ बस्त्र नी नभा ॥ अ ज मे रु के ॥ उ च स्व के ले इ मा रा गु
॥ वां वा नी यी युध वि वा र रु नभ स्त्री द्वि बी । ता वा धि पे ब ल नी ने अ नि नी व के अ ल पा युध
बहु का धि पी ठि तां ॥ ५ ॥
ता मा वां वा बहु कु
धा मि के बु धि भ नी व
वा रु ने ता मा नी नभ
मे रा क र्के रा य ते अ ने क वा रु न वां वा अ ने क क र्ता सि धि धि गंत वि स्मांत की ति अ अ
ने क ना क र्सा न्मा न यो ग थ बहु ता मा वां वा वा ना न क थ अ नि नी र्मे वा य यु ते क र्जि

[illegible]

28

अजवांवा वाहे राक सिराता मो राथु ते ते ते ले बरु मेः वेरु ते मे वें को को पो वा ने के अ कावे
ने। वरु को पयते के मे दि आन रुः श्री तिथे तो मो री नैः थि न की नीय सा वि द्दी न भू सुति-उ
तेरा ते रे सु न रा पे अ ला ते रा के वि द्दि

मालहृत्सति कुकावलि
नमवयं वापयते
नोमी ॥७॥ स्मरुके

ॐ स्वस्ति ते सा तद्विभक्ततवा पथ्यते सा तदेव वि॥१॥ ननु ये मां के॥—५ सा तदा
वि॥१॥ वि सा तद्विभक्ततवा पथ्यते सा तदेव वि॥१॥ ननु ये मां के॥—५ सा तदा

७४

कैमंरुतेनेकेप्रोहिमांके। स्मोराधा निभानिधनधुत्रस्वकेलेनोरा पथ सरवांकोला।
किवादनवाकालमेरा मंरेमाहरी वरियुधसोरा वांका रंथेरो मंरेअलपा। यम मा
तातिमांरा राधा निभ। ५॥ पंर मे मंरे॥ ६॥ पलकी मधमधक मतिद दांका उविदिध
इत पलमस्वकेले
लभदिती यमवल
सातिधरात कयाम
तेरे सांतर सवाती।
निधु यो गतं गध रंथेरो मने ताति मां॥ ७॥ रा स मंरे॥ ८॥ राती उको पग

स्त्री प्रमवृयिधुगुउरुस्त्री दयां पथ मतः॥
यते मांरे स्त्री यो कां॥ मा॥ पले मंरे॥ ५॥ अलस
थन पांनसामधिधवलु पलसामधिधक कय
अलपता कयो मधतंग यो गस कवि तेरो रां॥ ६॥

कमलवर्णो देवता सौतो मंवांका मति ३० ३० स्वस्ते मनेकस्त्री संहो गधके तु यते न कस्य लालो गध
रुत ३० स्ने निवृत्ति भू ॥ अशो मे मं ३॥ ५॥ ति पत्रायुध रुद्रस्त्री नति अस्ने व क अ न वि ३०
उ ३० स्वस्ते त्री प्ययुध
३॥ ५॥ पति त अ मी नो
उ ३० स्वस्ते पितृ श्री प्य
पं व वि राति व र्ज मं गा
रुत यते कं मं सि सि भू ॥ त न पला ते मं ३॥ ५॥ व रु ध न दां का वि आ वि ष्णु भू तु मि ला त भ रा क १० क स भू
उ ३० स्वस्ते वि भा वां का म रा ता ग यो ग भ व रु ध न दां का दा रु न यो ग भू ॥ त न पदा ३० मं ३॥ ५॥ पति त अ
विकलां गध ना पयते ने त ह्ये ३० रुत यते सु सी ॥ सु ने त भ पुं ग म लो क प्राप्ति अ पा प यते न न

७३

क शशिः म नात वा य का नी । धन री न धा ॥ ५ ॥ इ त म पे रे रा ता र्ग व रु ले ता वा था ये स त म
३ ख न ॥ १५ ॥ — ५ ॥ म ष रा रु प ले लि र्भ ते ५ ५ ल मे रा रु के तौ वा मृ तः प रु ती मे ष वृ ष त क
कं ह क न रा मां रो ७
कु न वां ॥ १० ॥ द्वि ती ये
जि पा प यु ते क ल त ३
॥ १॥ तृ ती ये रा रु के तौ ॥
त कं ह ले लां रु नं त व ती ॥ — ५ ३ ॥ — ५ न त र्थे रा रु के तौ ५ ५ व रु तु ष मा स मृ दि भ तौ य मृ द य
सो व क म मा त के रा थ पा प यु ते नी व यो ग भ रु त यु ते रा त रु से न ष ॥ १॥ प व मे रा रु के तौ ५ ॥

उत्तरी माती। २) तय तेन सो षभका वा वसनन गरी सा प्रका

यवागनीये माती नरक

के तो ॥ ५॥ पुत्रस्य मा भिमथ तथां न स मृद्विधा ॥ १०॥ दोर रो नारु के तो ॥ ५॥ अलप पुत्र वां न तेन सो

मभ पा प मति ॥ १०॥

५३३३ पदे राता गवि सुते ता वा थाये अ स म व ख आ रती ॥

ती ॥ मा उ त्ता वि स्य

न व मये तो न मभा रती ॥ श्री ॥ (मि ॥ छी ॥ ००००॥ — ॥ रती ॥

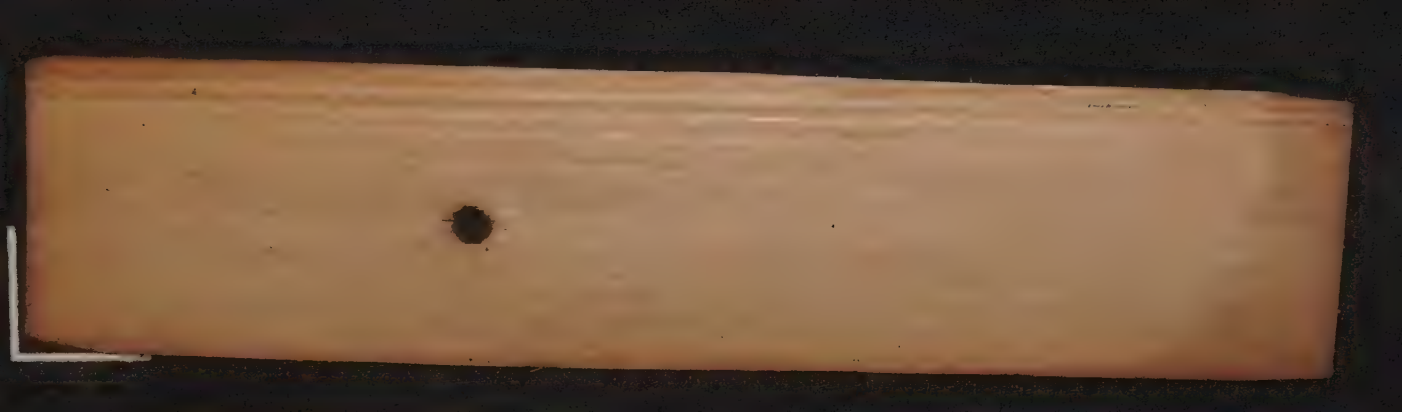
मा सभा रती ॥ ००००॥



[illegible]

[illegible]

कालि य न मा र लि को उ सु जी व ने पालि सि को उ सु री ना मा दे वे उ न म ले ग ने य लु न
ग हि उ गो व र्ण ने क न री क ॥ १०५ ॥ व न व न नो उ नु वि व नि तं य न न स लु न ने म न क लु वि
र री ना मा म नु क न के व स व क न लु क नि द व न क लो व न क नि री क ॥ १०६ ॥ ना न मा दे
त न न न उ व ती ष मा मालि सि को उ सु री ना मा व न नो उ नु म नु न ने गो गो ग लु गो
व ल क ने स र
७ म । तु त ल ता र व री न दे त न री क ॥ १०७ ॥ सी ते य न वा मा क र नो व र क लि से न र ग वि उ री ना
न व नि ल क न क नि वि व न ना ति सि को द व री क ॥ १०८ ॥ य र्द दी रा
नो से नो य नो द न न क मा मा स र ना मा र्द नै क य व क मा गी ना
द स मा दि यि न ले री क ॥ १०९ ॥ का न न री न य क उ लि ले द व दी व व न ल न री ना
या नो य न क क न म ले न क स न स न य मे द री क ॥ ११० ॥ रा न न वि ती ष मा
३ न व ल को न व व लु क न मा न री ना मा





२२ श्री गंगा सायन सभा पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य स्मिन् मीन
 स्तोमे नु वीतरा मीय तां पण्ड वि स्मृ त्तु त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये
 तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये
 ले पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये
 रातं पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये
 २२ श्री गंगा सायन सभा पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये
 पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये त्वात्त य पञ्चाङ्गरी तिराया भूतं वध आने विवर्धये

३ रीतिं गच्छेत्तीति ॥ ३ रीतिं लब्धं कार्यं ॥ तयो रस्मांतु वा ३ रीतिं ॥ ५ ॥ विष्णु रक्षते ॥
४ रीतिं रक्षते ॥ ४ रीतिं लब्धं कार्यं ॥ तयो रस्मांतु वा ४ रीतिं ॥ ५ ॥ विष्णु रक्षते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
तस्योक्तं श्रीमद्भगवत्पुत्रोक्तं ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
कादरीयत्वा ॥ १ ॥
कादरीयत्वा ॥ १ ॥
ति वेध द्वाद्वा देधा ये देवास्तिष्ठन्त्युत्तमं ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible]

कौतुकेण तावदं॥ कश्चित्तद्वन विवाहं पटुर्वैधातिषेकं प्रथमं दत्तिरौ यातु
प्राप्तं बालं लेक्य ततः न मरुसिलायां मं॥ मरुकुं प्रसस्तं यद्विद्वन्निनैवां न
को नर्यातां दि
या नग्नं नृणां
जाय॥ मं॥ न प्रसन्नमाथानवौ लक मं॥ यत्ना
दं॥ न काये प्रसन्नस्थालक वं॥ मं॥ ॥

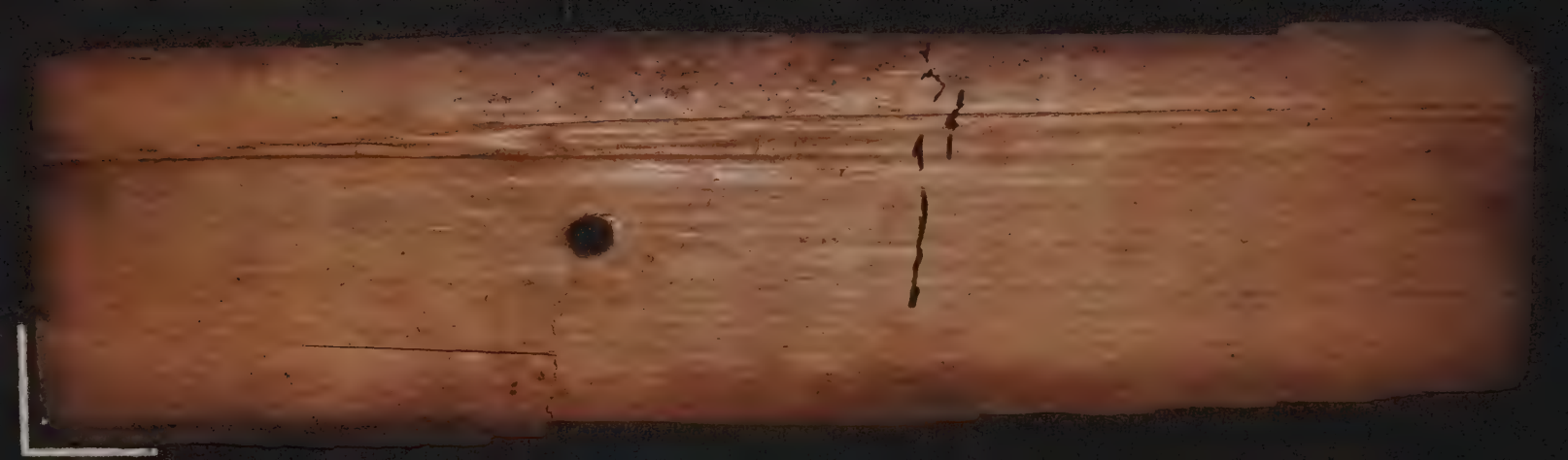


रौत

रवि	२०५	कुंज	कुथ	रु	रु	रु
राख रालि	०	कुथ	२०५	कुथ रु क	२०५ रवि	रवि २०५ कुंज
बथ	कुंज मनरवि	रु क रालि	कुंज रुंरु रालि	रालि	कुंज गुंरु	गुंरु

रौत

रवि	कुंज	बथ	रवि	रवि	रु	रु
२०५	२०५	२०५	२०५	२०५	२०५	२०५



(Faint handwritten Devanagari script)

नानुसंगिकं सति अतिरिक्तं

अ सोदि पा। रन व पा। रि व लि तै व।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । श्री कृष्णार्चनम् ।
विष्णुर्भक्त्या प्रीतः सर्वदा भक्तान् पश्यति ।

[illegible]

